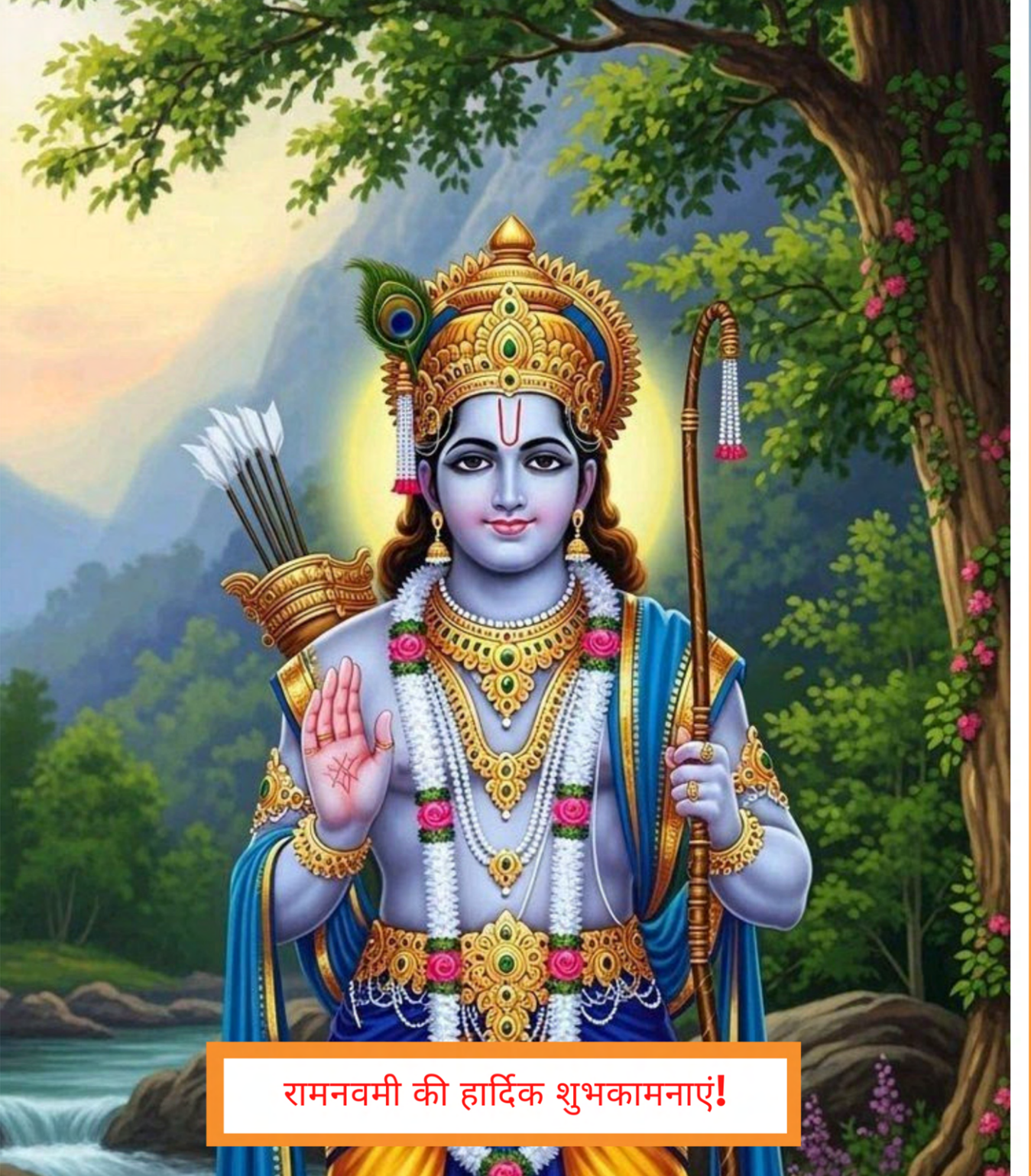


वर्ष: 17 | अंक : 3 | मार्च 2026 | मूल्य: ₹ 10 /=-

हंसलोक संदेश



रामनवमी की हार्दिक शुभकामनाएं!

भारतीय संस्कृति, अध्यात्म व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका



हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-17, अंक-3
मार्च, 2026
फाल्गुन-चैत्र, 2083 वि.स.
प्रकाशन की तारीख
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महारौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एग्जिक्यूटिव ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-I, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह

मूल्य-एक प्रति-रु.10/-

पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:

कार्यालय: हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,
B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,
छतरपुर, नई दिल्ली-110074

मो. नं. : 8800291788, 8800291288

Email: hansloksandesh@gmail.com

Website: www.hanslok.org

Subject to Delhi Jurisdiction

RNI No. DELHIN/2010/32010

संपादकीय

होली है भक्ति में रंगने का त्योहार

भा रतीय त्योहारों में होली पर्व विशेष स्थान रखता है। होली पर प्रायः हम दैहिक भान होकर एक-दूसरे को रंग लगाते हैं। इसमें कुछ लाभ हैं, तो कुछ हानि भी। इस तरह होली मनाने से वस्त्र और चेहरे रंग-बिरंगे हो जाते हैं, लेकिन ईश्वरीय स्मृति में रहकर यदि हम आत्मिक दृष्टि, वृत्ति, प्रेम और पवित्रता आदि दिव्य रंगों से होली खेलते हैं, तो हमारा जीवन स्वच्छ, स्वस्थ, सुखी, सुंदर व सदैव आनंदमय रहता है। होली शब्द के दो अर्थ हैं- एक 'होली' यानी मन और बुद्धि से ईश्वर की हो गई। दूसरा, 'हो-ली' यानी बीती सो उसे भूल जाएं। बीती हुई बातों को बार-बार याद करने से व्यर्थ के संकल्प चलते रहते हैं, जिससे समय नष्ट होता है। पुरानी दुःखदायी स्मृति और संस्कार जागृत हो जाते हैं, जो हमें अकारण ही अशांत करते हैं। इसलिए, होली हमें बीती को इति करने, अनमोल समय, संकल्प और शक्तियों को बचाने के साथ प्रभु स्मृति में सदैव आनंदित रहने का संदेश देती है।

यह पर्व आध्यात्मिक गुणों के रंगों से हमारी चेतना को भर देता है। स्थूल रंगों से तो हम होली खेलते हैं, पर आसपास के वातावरण में फैले शब्द, संकल्प और हर्ष-उल्लास का स्पंदन भी हमारे अंतःकरण को झंकृत करता है। होली प्रतीत कराती है कि कौन से रंग में हमें रंगना है- स्थूल रंगों से या प्रभु-स्मृति के रंगों से? भौतिक रंगों का आनंद तो एक-दो दिन तक रहता है; परन्तु परमात्मा की स्मृति के दिव्य रंग में खेलने वाले साधक शाश्वत सुख, शांति एवं ब्रह्मानंद की अनुभूति करते हैं। होली की पूर्व संध्या पर होलिका दहन किया जाता है, जिसमें दानवी स्वभाव वाली होलिका जलाते हैं। साथ में, कूड़ा-कबाड़ और बेकार की चीजें भी आग के हवाले कर देते हैं। होलिका जलाने का भावार्थ है कि हमें अपने जीवन में ईश्वरीय ज्ञान, सुमिरण और भक्ति की ज्योति जला कर समस्त विकार जला देने हैं। भक्त प्रह्लाद की तरह निरंतर परमेश्वर के प्रेमपूर्ण स्मरण में लवलीन रहने पर ही हम अपने भीतर अज्ञानांधकार में छिपी होलिका जैसी बुराइयों, स्वभाव एवं संस्कारों को योगाग्नि से भस्म कर प्रभु-भक्ति में रंग कर निष्काम भक्त बन सकते हैं। फिर हिरण्यकश्यपु जैसा शक्तिशाली दैत्य भी बाल बांका नहीं कर सकता। यही होली पर्व मनाने का मुख्य उद्देश्य है। ■

भक्ति की परीक्षा और विश्वास की महाविजय की गाथा है होली

भारतीय संस्कृति में होली को उल्लास, क्रीड़ा और रंगों का त्योहार माना जाता है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा को जब पूरा वातावरण अबीर और गुलाल से सराबोर हो जाता है, तब अक्सर हम इस पर्व की मूल आत्मा को विस्मृत कर देते हैं। होली केवल ऋतु परिवर्तन का ही उत्सव नहीं है; यह 'विश्वास' का उत्सव है। यह उस भरोसे का पर्व है

जो एक नन्हे बालक ने अपने आराध्य के प्रति दिखाया था। होली का वास्तविक संदेश यह है कि जब भक्त का विश्वास पर्वत की तरह अडिग हो जाता है, तो उसकी रक्षा का भार वह परम सत्ता स्वयं अपने कंधों पर उठा लेती है। यह पर्व हमें सिखाता

है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों, यदि प्रभु पर भरोसा है, तो हिरण्यकश्यपु जैसा अत्याचारी भी अंततः पराजित होता है।

इस आलेख में हम होली के इसी आध्यात्मिक मर्म को समझने का प्रयास करेंगे कि कैसे प्रह्लाद की भक्ति ने जड़ खंभे को भी चैतन्य कर दिया और कैसे भगवान ने अपने भक्त के 'योगक्षेम' का वहन किया। भक्ति की परीक्षा सुख में नहीं, दुःख की अतिरेक अवस्था में होती है। भक्त प्रह्लाद का जीवन इस सत्य का ज्वलंत उदाहरण है। प्रह्लाद के सामने जो संकट था, वह सामान्य नहीं था। उनका शत्रु कोई बाहरी व्यक्ति नहीं, बल्कि उनका अपना पिता हिरण्यकश्यपु था। हिरण्यकश्यपु केवल एक राजा नहीं, बल्कि अनियंत्रित अहंकार और नास्तिकता का प्रतीक था। उसे यह भ्रम था कि वह अजर-अमर है और तीनों लोकों का स्वामी है। ऐसे में उसके अपने ही घर में, अपनी ही संतान के मुख से 'नारायण'

का नाम सुनना उसके अहंकार पर सबसे बड़ा आघात था। कल्पना कीजिए उस बालक की मनःस्थिति की, जिसे पिता से स्नेह के स्थान पर मृत्यु का भय दिया जा रहा हो। हिरण्यकश्यपु ने प्रह्लाद को मारने के लिए क्या नहीं किया? उसे उन्मत्त हाथियों के पैरों तले कुचलवाने का प्रयास किया गया, विषधर सर्पों के बीच छोड़ा गया,



ऊँचे पहाड़ की चोटी से नीचे गिराया गया। होलिका की गोद में बिठाकर अग्नि में जलाने का षड्यंत्र रचा गया। किंतु, आश्चर्यजनक रूप से प्रह्लाद का मन एक क्षण के लिए भी विचलित नहीं हुआ। प्रह्लाद की यह स्थिरता ही 'पूर्ण भरोसे' का

होली महोत्सव 04 मार्च पर विशेष

प्रमाण है। प्रह्लाद ने कभी शिकायत नहीं की, न ही कभी भगवान से प्रश्न

किया कि 'मुझे ही इतना कष्ट क्यों?' उन्होंने हर संकट को प्रभु की इच्छा मानकर स्वीकार किया। यही वह बिंदु है, जहाँ भक्त और भगवान के बीच का फासला मिटने लगता है। प्रह्लाद के पास न कोई शस्त्र था, न सेना और न ही कोई भौतिक बल। फिर भी वे सुरक्षित रहे। आखिर उनकी रक्षा कौन कर रहा था? उनकी रक्षा कर रहा था उनका 'अनन्य विश्वास'। शास्त्र कहते हैं कि जब भक्त अपनी सुरक्षा की चिंता प्रभु पर छोड़कर केवल प्रभु का चिंतन करता है, तो प्रभु को उसकी चिंता करनी पड़ती है। प्रह्लाद ने अपनी रक्षा के लिए कभी हाथ नहीं उठाए, वे सदैव हाथ जोड़े रहे। जब उन्हें विष दिया गया, तो उनका विश्वास था कि 'यह विष नहीं, मेरे नारायण का चरणामृत है।' इस भाव ने हलाहल विष को भी अमृत में बदल दिया। होलिका दहन का प्रसंग इसी विश्वास की विजय का उद्घोष है। होलिका को वरदान था कि अग्नि उसे नहीं जलाएगी, यह

उसे अपने **‘साधन’** पर भरोसा था। प्रह्लाद को वरदान नहीं, **‘साध्य’** (भगवान) पर भरोसा था। परिणाम सबके सामने है। साधन (चादर/वरदान) विफल हो गया और साधना सफल हो गई। होलिका जल गई और प्रह्लाद कुंदन बनकर निकले।

यह घटना सिद्ध करती है कि भौतिक सुरक्षा के उपाय धरे के धरे रह जाते हैं, किंतु परमात्मा का सुरक्षा-चक्र अभेद्य होता है। इस कथा का और होली के संदेश का चरम बिंदु वह है, जब हिरण्यकश्यपु प्रह्लाद से अंतिम प्रश्न पूछता है। क्रोध से भरकर उसने अपनी तलवार निकाली और पूछा- ‘तू कहता है, तेरा ईश्वर सर्वत्र है? बता, क्या इस खंभे में भी है, तेरा ईश्वर?’ ध्यान देने योग्य बात यह है कि खंभा **‘जड़’** पदार्थ है। सामान्य तर्क से उसमें जीवन नहीं हो सकता। लेकिन प्रह्लाद का उत्तर सामान्य तर्क से परे था। उन्होंने पूर्ण विश्वास के साथ कहा- हाँ पिताजी! वे मुझमें हैं, आपमें हैं और इस खंभे में भी हैं। प्रह्लाद का यह कथन केवल वाक्य नहीं था, यह एक भक्त की **‘पराकाष्ठा’** थी। अब प्रश्न प्रह्लाद की जान का नहीं, बल्कि प्रह्लाद के **‘वचन’** की लाज का था। यदि उस दिन भगवान खंभे से प्रकट न होते, तो प्रह्लाद झूठा सिद्ध हो जाता और भक्ति पराजित हो जाती। भक्त के वचन को सत्य करने के लिए भगवान ने प्रकृति के नियमों को भी बदल दिया। भगवान विष्णु, जो बैकुंठ में शेषशैय्या पर विश्राम करते हैं, उन्हें उस कठोर पत्थर के खंभे में प्रवेश करना पड़ा। जैसे ही हिरण्यकश्यपु ने खंभे पर प्रहार किया, एक भीषण गर्जना के साथ खंभा फट गया। उसमें से न नर, न पशु अपितु **‘नरसिंह’** रूप में भगवान प्रकट हुए। यह प्रसंग बताता है कि ईश्वर किसी मंदिर, मस्जिद या तीर्थ तक सीमित नहीं है। यदि पुकारने वाला सच्चा हो, तो वह जड़ पाषाण को फाड़कर भी प्रकट हो सकता है। भगवान ने हिरण्यकश्यपु की सभी शक्तों (न दिन, न रात, न घर, न बाहर, न अस्त्र, न शस्त्र) का मान रखा, फिर भी उसका अंत किया।

प्रह्लाद की कथा श्रीमद्भगवद्गीता के उस महामंत्र की जीवंत व्याख्या है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था-

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥

अर्थात् जो अनन्य भाव से मेरा चिंतन करते हैं, उन नित्य-युक्त भक्तों के योग (प्राप्ति) और क्षेम (सुरक्षा) का वहन मैं स्वयं करता हूँ। संसार में हर व्यक्ति अपनी सुरक्षा (क्षेम) के लिए चिंतित है। कोई धन संचय करता है, कोई बीमा कराता है, कोई अंगरक्षक रखता है। हिरण्यकश्यपु ने

भी अपनी सुरक्षा के लिए ब्रह्माजी से दुर्लभ वरदान प्राप्त किए थे। उसे लगा था कि उसने अपनी मृत्यु के सभी द्वार बंद कर दिए हैं। उसे **‘अपने बल’** पर भरोसा था। दूसरी ओर प्रह्लाद थे, जिन्होंने अपनी सुरक्षा का भार संपूर्णतः भगवान पर छोड़ दिया था। जब आप अपनी नाव की पतवार पूरी तरह मांझी (ईश्वर) के हाथ में दे देते हैं, तो तूफान से निकालने की जिम्मेदारी मांझी की हो जाती है। लेकिन यदि आप खुद पतवार चलाने की कोशिश करते हैं और बीच-बीच में ईश्वर को भी पुकारते हैं, तो वह पूर्ण समर्पण नहीं है। प्रह्लाद ने कभी नहीं कहा- हे प्रभु आप आइए और मुझे बचाइए। उन्होंने केवल स्मरण किया। भगवान को स्वयं आना पड़ा। यह होली का सबसे बड़ा संदेश है- चिंता नहीं, चिंतन करो। चिंता भक्त का स्वभाव नहीं है, निर्भयता भक्त का आभूषण है।

आज का मनुष्य भय, असुरक्षा और अविश्वास के दौर से गुजर रहा है। हमारे जीवन में भी कई प्रकार के ‘हिरण्यकश्यपु’ हैं। कभी आर्थिक संकट, कभी शारीरिक रोग, तो कभी पारिवारिक कलह। हम भी अक्सर प्रह्लाद की तरह स्वयं को असहाय पाते हैं। ऐसे समय में होली का पर्व हमें स्मरण दिलाता है कि दुःख के क्षणों में ईश्वर पर अविश्वास करना स्वाभाविक मानवीय दुर्बलता है, लेकिन वही क्षण परीक्षा का होता है। हमें प्रह्लाद की तरह डटे रहना चाहिए। हमें यह याद रखना चाहिए कि जो ईश्वर खंभे में हो सकता है, क्या वह हमारी समस्याओं के बीच नहीं है? वह देख रहा है, बस वह हमारे धैर्य की परीक्षा ले रहा है। हिरण्यकश्यपु कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, उसका अंत निश्चित है। सत्य परेशान हो सकता है, पराजित नहीं। होली केवल लकड़ियों का ढेर जलाने का नाम नहीं है। यह अपने भीतर के संशय और अज्ञान को जलाने का पर्व है। जब हम होलिका दहन की अग्नि को देखते हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि यह अग्नि पाप को जलाती है, लेकिन पुण्य और भक्ति को और अधिक निखार देती है। प्रह्लाद की कथा कोई पौराणिक आख्यान मात्र नहीं है, यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि **‘विश्वास फलदायकम्’** विश्वास ही फल देता है।

आइए, इस होली पर हम अपने हृदय के किसी कोने में बैठे डर को निकाल फेंकें और प्रह्लाद जैसा भरोसा जगाएं। हम यह विश्वास करें कि हमारा **‘योगक्षेम’** वहन करने वाला कोई और नहीं, स्वयं त्रिभुवन का स्वामी है। जब यह भाव गहरा हो जाएगा, तभी हमारे जीवन में वास्तविक रंगों की वर्षा होगी। **जिसके सिर ऊपर तू स्वामी, सो दुःख कैसा पावे।** प्रभु पर पूरा भरोसा रखना ही होली का परम संदेश है। ■

सिर चढ़कर बोलने वाला जादू

यो गिराज श्री हंस जी महाराज के प्रथम दीक्षित प्रेमीभक्तों एवं शिष्यों में अधिकतर दिल्ली क्लॉथ मिल के कर्मचारी ही थे। श्री महाराज जी ने स्वयं इन्हें दीक्षा दी थी। श्री महाराज जी के अलौकिक व्यक्तित्व का इन सभी शिष्यों पर ऐसा जादू हुआ कि वे सब प्रकार से घर-बार की सुध छोड़कर गोपी-ग्वालों की तरह उनके पीछे हो लिए थे। इसीलिए, उन दिनों कुछ लोग श्री महाराज जी को जादूगर कहते थे। इस विषय में एक बार स्वयं श्री हंस जी महाराज ने हरिद्वार में सुनाते हुए कहा था कि नजीबाबाद के एक शाहू बालकिशन थे। एक बार हम



पंजाब का भ्रमण करके नजीबाबाद आए और एक धर्मशाला में ठहर गए। धर्मशाला में एक देव मंदिर भी था। पुजारी जी से एक कमरा ठहरने के लिए लिया; उसमें अपना सामान रखकर ताला लगाया और पुजारी जी से पूछा- ‘यहां कोई रामायण या गीता का प्रेमी भी है?’ पुजारी जी हमें शाहू बालकिशन के पास ले गये और उनसे कहा- ‘‘आप’’ गीता और रामायण के बड़े विद्वान हैं; आपसे कुछ बातचीत करना चाहते हैं।’

शाहू बालकिशन की बड़ी दुकान थी, जिस पर कई मुनीम काम कर रहे थे। हमने शाहू साहब से पूछा, आपने गीता पढ़ी है? उन्होंने शंकर भाष्य गीता मंगवाई। हमने गीता के ग्यारहवें अध्याय का बारहवां श्लोक निकाला और पढ़कर सुनाया-

दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।

यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः॥

फिर उनसे पूछा- ‘जिस विश्व रूप की हजारों सूरज भी बराबरी नहीं कर सकते, जिसे अर्जुन ने देखा और भगवान श्रीकृष्ण ने दिखाया, क्या ऐसा प्रकाश तुमने देखा है? तब वह

कहने लगे, नहीं। हमने कहा, फिर गीता के पढ़ने से क्या लाभ है? वह कहने लगे, तब आप ही उस प्रकाश को दिखाइये। दो-चार बातें और हुई, हम उन्हें एकांत कमरे में ले गए, गलीचा बिछाया। पर, जब हम उन्हें समझाने को उनके पास बैठे, तो उनके दिल में ख्याल आया कि न जाने कुछ जादू करके मुझे ठग न लें। रुपये वाला हमेशा डरता रहता है। हम उनके भाव को समझ गए और हमने उनको दूर से ही ज्ञान साधना की विधिक्रियाएं समझाईं। यह बात हमने उनसे पहले ही कहलवा ली थी कि यदि बात सच्ची हुई तो तन, मन और धन अर्पण करना होगा, उन्होंने भी झट से कह दिया

कि हाँ- तन, मन और धन अर्पण करूंगा। हमने उन्हें समझाने में काफी समय लगाया, जब वे साधना विधि को अच्छी प्रकार समझ गये, तो हम चले आए। फिर वे मेरे पीछे लगे रहे और जहां भी सत्संग होता, वहीं पहुंच जाते। इस प्रकार कुछ समय तक सत्संग सुनते-सुनते उन्हें हमसे प्रेम हो गया! इतना प्रेम हो गया कि वे अपना सर्वस्व भी सेवा में लगाने को तैयार हो गए, तब हमने एक बार पूछा- कहो शाहू साहब, कैसा जादू है? वह कहने लगे- महाराज जी! सिर चढ़कर बोलने वाला जादू है।

श्री महाराज जी के व्यक्तित्व में इतना आकर्षण था कि लोग अनायास ही उनकी ओर खिंचे चले आते थे। कई बार वे प्रारंभिक सत्संगों में सुनाया करते थे- देखो भाई, मेरे पास मत आया करो, नहीं तो चिपक की बीमारी लग जाएगी। दिल्ली में श्री महाराज जी सतनारायण गुड़ वालों की धर्मशाला में ठहरा करते थे। यह धर्मशाला लाल किला के पास स्थित है और यहीं पर सत्संग प्रचार होता था। कभी-कभी श्री महाराज जी राव जी के बाग, जो कि दिल्ली क्लॉथ मिल के पास था, में

एक छोटे-से कमरे में ठहरा करते थे। उस समय जैसे ही श्री महाराज जी के दिल्ली में आने की खबर मिलती थी, तो प्रेमी एक-दूसरे को खबर कर देते थे और अपनी ड्यूटी के बाद श्री महाराज जी के दर्शनों के लिए पहुँच जाते थे। उन दिनों गिने-चुने ही प्रेमी होते थे और उन्हें श्री महाराज जी का बड़ा घनिष्ठ संपर्क व सानिध्य प्राप्त हुआ। श्री महाराज जी की दयालुता व संरक्षण प्राप्त कर वे लोग अपने आपको धन्य समझते थे और श्री महाराज जी भी उनकी वैसी ही रक्षा करते थे, जैसे एक माँ अपने नवजात शिशु की रक्षा करती है।

श्री महाराज जी कई वर्षों तक दिल्ली क्लॉथ मिल में नौकरी करने वाले प्रेमीभक्तों के क्वार्टरों में ही सत्संग करते रहे। भिन्न-भिन्न प्रेमी अपने-अपने घरों में श्री महाराज जी का सत्संग रखवाते थे, वहीं पर सभी प्रेमीभक्त इकट्ठे हो जाते थे और कई बार रात-रातभर सत्संग-भजन होते रहते थे। एक बार पं. विष्णुदत्त के क्वार्टर में सत्संग हो रहा था। शाम का समय था। कुछ प्रेमी श्री महाराज जी के दर्शन के लिए बैठे हुए थे। जैसे ही श्री महाराज जी अपने आसन पर बिराजे तो उन्होंने बद्री नाम के प्रेमी से कहा-अरे, बद्रीबाबू! आज मल्हार राग गाओ! देखो, वर्षा होगी। बद्रीबाबू शास्त्रीय संगीत के पक्के रागी थे, जैसे ही उन्होंने मल्हार राग की धुन छेड़ी और साथ में उनके तबला मास्टर ने तबला बजाया, तो कुछ देर बाद आसमान में बादल मंडराने और गर्जने लगे। एक विचित्र सा वातावरण छा गया। श्री महाराज जी एवं सभी श्रोतागण उस राग में मस्त हो गए। थोड़ी देर में छमाछम वर्षा होने लगी। श्री महाराज जी एवं प्रेमी बाहर बरामदे में बैठे हुए थे। वर्षा की बौछार से सभी भीगने लगे। पहले तो प्रेमी बड़े हर्षित हुए, लेकिन जब भीगने लगे तो सिकुड़-सिकुड़कर अंदर जाने लगे। फिर श्री महाराज जी ने हंसते हुए कहा कि बद्रीबाबू, अब कोई ऐसा राग सुनाओ, जिससे वर्षा बंद हो जाए। बद्रीबाबू ने कहा कि महाराज जी, मुझे तो ऐसा कोई राग आता ही नहीं है। तो श्री महाराज जी ने कहा- अच्छा, तुम सब इस भीगी दरी को इस टीन शेड पर डाल दो। जैसे ही भीगी दरी टीन शेड पर डाली, वर्षा रुक गई।

पं. विष्णुदत्त आर्यसमाज विचारों के थे। वे इन सब बातों को गुरुडम समझते थे। इसलिए उन्होंने श्री महाराज जी के पास जाना छोड़ दिया। एक दिन अकस्मात श्री महाराज जी गली से कहीं जा रहे थे, तो पंडित विष्णुदत्त कतराकर निकल जाना चाहते थे, लेकिन जैसे ही श्री महाराज जी की नजर उन पर पड़ी, तो वे कहने लगे- क्यों महाशय जी! आजकल तो

आप आते ही नहीं हैं, क्या बात है, हमसे कोई गलती हो गई है क्या? अगर हम कुछ गलत कहते हैं या हमारी बातें झूठी हैं, तो तुम तो आर्य समाजी हो, हमें समझाओ। इस बात ने पंडित विष्णुदत्त पर जादू-सा असर किया। उन्होंने कहा- नहीं महाराज जी, ऐसी बात नहीं है। मैं कुछ घर के कामों में व्यस्त हो गया हूँ, इसलिए नहीं आ सका। श्री महाराज जी ने कहा- अरे पंडित जी, सत्संग में आना। मनुष्य जन्म में तो सत्संग के लिए समय निकालना ही चाहिए। फिर यह दोहा सुनाया-

ये दुनिया के धंधे हरगिज कम न होंगे।

अफसोस है कि एक दिन हम न होंगे।।

फिर कहने लगे- देखो, हम पाखंडी नहीं हैं। हमने तो श्री गुरु महाराज जी की कृपा से परमात्मा के उस अखंड नाम और रूप को जाना है, जिसकी महिमा सभी वेद-शास्त्रों ने गाई है। अगर, तुम सत्संग में नहीं आओगे और उस अखंड नाम को नहीं जानोगे, तो तुम्हारा ही मनुष्य जन्म व्यर्थ जाएगा, मेरा तो कुछ नुकसान नहीं होगा। सोचो और विचारो; संतों की संगत बड़े भाग्य से मिलती है और श्रेष्ठ पुरुषों की संगत से ही मनुष्य श्रेष्ठ अर्थात् आर्य बनता है।

मनुष्य शरीर की यही विशेषता व श्रेष्ठता है कि वह भगवान को तत्व से जान सकता है। जब तुमने उसको जाना ही नहीं, तो केवल आर्य समाजी कहने मात्र से तो तुम आर्य नहीं हो जाओगे। आर्य होने के लिए तुम्हें श्रेष्ठ कर्म करने होंगे और सत्संग सुनना, श्रेष्ठ पुरुषों के पास बैठना, उस ब्रह्म की चर्चा करना और सुनना और फिर उसे तत्व सहित जानना होगा। क्या ये श्रेष्ठ कार्य नहीं है? अरे तुम हमें गुरु मत समझो, इंसान ही समझ लो। इंसान को तो इंसान से मिलना चाहिए। पंडित विष्णुदत्त जी श्री महाराज जी की इन बातों से अत्यधिक प्रभावित हुए और इन बातों को जिंदगी में कभी भी भुला नहीं पाए और तब से उनके जीवन का इतना रूपांतरण हुआ कि वे कहते थे कि सचमुच मुझे गुरु महाराज जी ने आर्य बना दिया है। वेदों और उपनिषदों के तत्व को व्यावहारिक रूप से जना दिया है। मैं उनके उपकारों का बदला कभी नहीं चुका पाऊँगा। उनकी सीधी-सादी अकाट्य बातों को कोई काट नहीं सकता था।

श्री हंस जी महाराज में ज्ञान प्रचार की इतनी अधिक लगन थी कि वे सदैव आत्म-जिज्ञासुओं को ढूँढ़ते रहते थे; और जैसे ही उन्हें कोई जिज्ञासु मिलता, उसे आत्मज्ञान का व्यावहारिक बोध कराकर धन्य कर देते थे। करुणा का यही प्रसाद आज सर्वत्र प्रेमी भक्तों के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। ■

हम वासी वा देश के, जहाँ रैन दिवस कछु नाहिं

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनो! जब जिज्ञासु को आत्मज्ञान कराया जाता है, उसे उपदेश दिया जाता है, तो उस समय उससे कुछ लिखित में नहीं लिया जाता। उसको जबानी बताया और समझाया जाता है कि गुरु महाराज की आज्ञा के बिना किसी को बताना नहीं। भजन की कुछ क्रिया एकान्त में करना और कुछ सबके सामने करना। तन, मन और धन से सेवा करना, लेकिन यह जिज्ञासु तथा शिष्य से लिखाया नहीं जाता। क्योंकि प्रभु का जो रास्ता है, वह लिखने-पढ़ने के अन्दर नहीं है। इसीलिये भगवान ने कहा है कि मैं वेदों के पढ़ने से नहीं जाना जाता, मैं तो भक्ति से जाना जाता हूँ। अगर वेदों से परमात्मा मिले, तो कितने आदमी ऐसे होंगे जो वेद पढ़ सकते हैं? रामचरितमानस में संत तुलसीदास जी कहते हैं-

**भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी।
बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी॥**

यह रामचरितमानस में लिखा है कि भक्ति स्वतंत्र है और सब सुखों को देने वाली है, लेकिन सत्संग के बिना कोई भी प्राणी भगवान की भक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता। भक्ति लेखे-जोखे के अन्दर नहीं आती। कोई बावला मनुष्य है, कोई काना है, कोई बहरा है, लेकिन उसके अन्दर भी वही शब्द है, वही भगवान है। सबके अन्दर वही चेतन सत्ता है।

मेरे पास बहुत-सी चिट्ठियाँ आती हैं कि हमने उपदेश ले रखा है, लेकिन

हमें कोई फायदा नहीं होता, तो मेरे से क्यों पूछते हो? अपने से ही पूछो न कि फायदा कैसे हो? गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं



कि जो अन्तकाल में मेरा सुमिरण करते हुए शरीर का त्याग करता है, वह मेरे को मिलता है। फिर छोटे श्लोक में बताया कि ऐसी बात नहीं है कि तुम ऐसा ख्याल करो कि जिस वक्त मरेंगे, उसी वक्त हम भगवान को मिल जायेंगे। जिस वस्तु को हमने जीवन भर याद किया, अंत समय में हमें उसी की याद आएगी। जब से हम पैदा हुए हैं, तब से लेकर मरण तक जिस चीज अथवा बात को बहुत याद करेंगे, अन्त समय में वही बात याद आएगी। इसीलिए सातवें श्लोक में उन्होंने अर्जुन से कहा कि तू हर समय निरन्तर मेरा सुमिरण भी कर और युद्ध भी कर।

कुछ समय पहले हमारी जो दुश्मन देश से लड़ाई हुई थी, उसमें जो बहादुर सैनिक लड़ रहे थे, उनमें से कुछ वीर जवान मेरे पास आये थे। वे कह रहे थे कि दनादन बन्दूक और गोलों की आवाज इस तरह आ रही थी कि कुछ के कानों से तो खून बहने लगा। इतनी आवाज वहाँ आ रही थी और फिर कहीं खाने का ठिकाना नहीं, बैठने का ठिकाना नहीं, सोने का ठिकाना नहीं, बस चलते रहो। अगर कहीं मौका मिला तो खन्दक खोद लिया और वहीं पर दीवार के सहारे सो गये। उस वक्त ऐसी मुसीबत में सचमुच उनको उपदेश हो और भगवान की याद आए, तो कितना उनको फायदा पहुँच सकता है। खन्दक में बैठे हुए हैं, एक तरह से मौत के मुँह में हैं, उस वक्त यदि भगवान के नाम का सुमिरण करें, तो कितना अच्छा है।

हमने देखा है कि एक बहुत बड़ा साँप था, उसने एक मेंढक को पकड़ रखा था। मेंढक बहुत बड़ा था और साँप के मुँह में आहिस्ता-आहिस्ता जा रहा था। अब उसको यह मालूम हो या न हो, यह तो भगवान ही जानें, लेकिन हम यह देख रहे थे कि साँप उसको आहिस्ता-आहिस्ता निगलता जा रहा है और इधर कोई मच्छर वगैरह आए, तो मेंढक उसको खाने के लिए मुँह फैलाता था। वह यह नहीं सोच पा रहा था कि थोड़ी देर में तो उसे साँप के मुँह में चले ही जाना है, उस समय भी वह मच्छर पकड़ने की कोशिश

कर रहा था। तो मैंने कहा प्रभु! तेरी यह क्या लीला है। ठीक ऐसे ही हम भी हैं। हम भी आहिस्ता-आहिस्ता एक-एक दिन करके काल के मुँह में ही जा रहे हैं, फिर भी विषयों के भोगने की इच्छा बनी रहती है और हमारा मन विषय भोगों की तरफ लगा रहता है।

मेरे कहने का मतलब यह है कि भगवान के नाम की कद्र अभी तुमको नहीं है, क्योंकि तुम अभी जीवित हो। पर इसकी कद्र तुम्हें उस वक्त होगी, जिस वक्त तुम्हारा मुँह खुला-का-खुला रह जायेगा, एक भी अक्षर का उच्चारण नहीं कर सकोगे और तुम्हारे हाथ-पांव अकड़ जायेंगे। उस समय जब कोई तुमसे पूछेगा कि मुझे पहचानते हो, तो जवाब नहीं दे सकोगे। तुम्हारी आँखों में अंधेरा छा जायेगा, स्वाँसें उल्टी चलने लगेंगी और फिर यह भी जरूरी नहीं कि बीमार होकर ही आदमी मरे। तुमने अखबारों में पढ़ा होगा कि समुद्र में तूफान आया, उससे कई हजार आदमी मर गये। इतने आदमी लड़ाई में नहीं मरे और एक तूफान में मर गए। तो मौत का तूफान कब आ जाये, किस वक्त आ जाये, किस बहाने से आ जाये, यह कोई नहीं जानता। रास्ते में चलते-चलते एक्सीडेंट हो जाता है। कई यमुना में नहाते हुए डूब जाते हैं। तो उस वक्त कैसे माला फेरोगे, किस मंत्र का जप करोगे, कैसे बड़े-बड़े मंत्र जप सकोगे? जो तुम आज कर रहे हो और अगर ऐसा हो भी, तो हमारे यहाँ तो ऐसा कहते हैं-

**सुमिरण सुरत लगाय के,
मुख से कुछ न बोल।
बाहर के पट देय के,
अन्तर के पट खोल।।**

यह संत-महात्माओं का कहना है,

लेकिन संसार तो बिल्कुल अन्धा है। आज लोग जिन बातों में लगे हुए हैं, यह मंत्र-तंत्र आखिरी समय में कुछ काम नहीं आयेंगे, तो फिर क्या फायदा होगा? तो सबसे पहले भगवान नाम के उस सुमिरण को जानो जो अन्त समय में किया जा सके, फिर उसका अभ्यास करो। जब जीवन काल में निरन्तर सुमिरण करने का अभ्यास करोगे, तब अन्तिम समय में भी सुमिरण हो सकेगा। भगवान आज भी तुमको मिल सकते हैं। क्यों भाई, किसी को आज तक अगर भगवान मिले हैं, तो तुमको क्यों नहीं मिलेंगे? लेकिन देखो, जैसे बिल्कुल शुद्ध

भक्ति स्वतंत्र है और सब सुखों को देने वाली है, लेकिन सत्संग के बिना कोई भी प्राणी भगवान की भक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता। भक्ति लेखे-जोखे के अन्दर नहीं आती। कोई बावला मनुष्य है, कोई काना है, कोई बहरा है, लेकिन उसके अन्दर भी वही शब्द है, वही भगवान है। सबके अन्दर वही चेतन सत्ता है।

और साफ लोहा होता है, उसको चुम्बक लगाओ, तो वह चुम्बक तुरंत उस लोहे को खींच लेगा। लेकिन लोहे में यदि जंग लगा हुआ है और वह मिट्टी से सना हुआ है, यदि उस लोहे को चुम्बक लगाओ, तो नहीं पकड़ता। क्यों? क्योंकि उसमें भेद है। पतला कागज बीच में रखकर देख लो, चुम्बक लगाओ नहीं पकड़ेगा, क्योंकि बीच में भेद है, बीच में कागज है। इसी तरह का भेद भगवान के नाम सुमिरण में भी है। वह भेद क्या है? वह भेद हमारे अन्दर का छल है, कपट है और अगर छल-कपट न हो, तो फिर तो वह चीज एक ही है। एक ही शब्द है।

कबीर साहब ने कहा है-

**हम वासी वा देश के,
जहाँ रैन दिवस कुछ नाहिं।
शब्द मिलावा होत है,
देह मिलावा नाहिं।।**

वह तो मिला ही हुआ है। नाम सुमिरण में क्यों नहीं मन लगता? क्योंकि, मन के अंदर बहुत जंग है। सुमिरण करने से वह तो आहिस्ता-आहिस्ता साफ हो जायेगा। लेकिन दूसरा कारण क्या है, क्यों मन नहीं लगता? तो यह आज्ञा के भेद के कारण नहीं लगता। तुम कहना नहीं मानते हो, गुरु महाराज की आज्ञा नहीं मानते हो और आज्ञा मानना ही अनन्य भक्ति है। भगवान ने कहा कि और किसी तरह से मेरा ज्ञान नहीं होगा। केवल अनन्य भक्ति से ज्ञान होगा। मुझे एक ब्रह्मज्ञानी मिले, उनसे मैंने पूछा कि भगवान तो ऐसा कहते हैं, तो कहने लगे कि वह तो भक्ति की महिमा के लिए भगवान ने कहा है। तो मैंने कहा कि भक्ति की महिमा है, इसलिए तो भगवान ने बताया कि लोग भक्ति करेंगे, तो मुझे मिल जायेंगे। मैंने गीता अध्याय 6 के

श्लोक 1, 2 और 3 उनके सामने रखे और पूछा कि भगवान क्या बताते हैं। मैंने कहा कि ब्रह्मज्ञान तो साध्य है, साधन नहीं है और भगवान साधन बताते हैं। वह कहते हैं कि साधन करने में बड़ा सुगम है, तो इसका अर्थ बताइए? लेकिन वह वैसे ही ब्रह्मज्ञानी थे, क्योंकि अगर ज्ञान हो जाता, तो वह तो गीता के ज्ञान को समझते होते। जिसको ज्ञान हो गया, वही तो उसकी रम्य को समझेगा। मैंने उनको फिर दिखाया कि तीसरे श्लोक में भगवान कहते हैं कि जिसकी इस तत्व रूपी ज्ञान में श्रद्धा नहीं है, प्रेम नहीं है, वह मेरे को कभी नहीं मिल सकता।

तुलसी संगत साधु की, कटें कोटि अपराध

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनो! आज के सत्संग में बहुत जनता आयी है; जिनको जहाँ स्थान मिले, वे वहीं पर बैठ जाएं। वास्तव में सत्संग ही एक ऐसी चीज है, जो मानव को शांति प्रदान करती है। तभी संतों ने कहा-

बड़े भाग पाइब सत्संगा।

बिनहिं प्रयास होय भवभंगा।।

मनुष्य को सत्संग बड़े भाग्य से प्राप्त होता है। मरने के बाद मनुष्य का सब कुछ संसार में ही छूट जाना है, केवल सत्संग और भजन की कमाई ही उसके साथ जाती है। भजन में बताया है-

**मुट्ठी बांधे आया जगत में,
हाथ पसारे जायेगा।**

एक बच्चा जब पैदा होता है, वह संसार में मुट्ठी बांधकर आता है और जब मरता है, तो हाथ खोलकर संसार से चला जाता है। हम यहां पर सत्संग सुनने के लिए आये हैं, तो ध्यान से सत्संग सुनें, ज्ञान को जानें और भजन करें! संसार से जाने पर कोई भी यहां से खाली हाथ नहीं जाये, बल्कि भजन की कमाई अपने साथ लेकर जाये।

एक राजा था। उसके दरबार में एक मूर्तिकार दो मूर्तियां लाया और कहा- महाराज! ये मूर्तियां एक जैसी दिखाई देती हैं, पर इनमें कुछ फर्क है। कृपया बताइए, इनमें क्या फर्क है? राजा ने सारे मंत्रियों से यही प्रश्न पूछा, पर कोई नहीं बता पाया कि उन मूर्तियों में क्या फर्क है। एक विवेकशील मंत्री बोला-महाराज! अभी बताता हूं। उसने एक मूर्ति के कान में धागा डाला, वह दूसरे कान में से निकल गया। फिर उसने दूसरी मूर्ति के

कान में धागा डाला, तो वह उसके पेट में चला गया। संतों ने दो प्रकार के व्यक्ति बताये हैं। एक तो वह व्यक्ति है, जिसने एक कान से अच्छी बातों को सुना और



दूसरे कान से निकाल दिया। दूसरा व्यक्ति वह है जो एक कान से सुनकर उसको पेट में पचाता है अर्थात् उन बातों पर मनन करता है। अब देखना होगा कि हम इसमें से कौन-सी श्रेणी में आते हैं। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

एक घड़ी आधी घड़ी,

आधी ते पुनि आध।

तुलसी संगत साधु की,

कटे कोटि अपराध।।

एक घड़ी, नहीं तो फिर आधी घड़ी और आधी से भी आधी घड़ी का सत्संग सुनने से हजारों अपराध नष्ट हो जाते हैं।

एक सेठ जी सत्संग में आये। उन्होंने सत्संग में तीन बातें ही ध्यान से सुनीं कि आइये, बैठिये और जाइये। सत्संग के बाद वे अपने घर आये। रात्रि में उनके घर पर एक चोर आया। रात्रि में सोते हुए सेठ जी को सपना आया। सेठ जी सपने में ही कहने लगे-आइये। चोर ने उनकी आइये की आवाज सुनी और कुछ देर रुक गया। फिर सेठ ने सपने में

बोला, बैठिये। अब चोर डर गया। फिर कहा, जाइये! अब चोर बहुत घबराया और सोचा कि सेठ जी जाग रहे हैं और उसे देख लिया है। सेठ जी मुझे रंगे हाथों पकड़ना चाहते हैं। चोर ने कहा कि सेठ जी, मैं आपसे माफी मांगता हूं। सेठ जी ने सोचा कि सत्संग में उन्होंने ये तीन ही बातें ग्रहण कीं, जिनके कारण उनका सारा धन बच गया। यदि पूरे सत्संग की बातों को सुन लेता,

तो मेरे जीवन का कल्याण हो जाता। फिर वह सेठ सत्संग में जाने लगा और ज्ञान प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य किया। आज बहुत से लोग कहते हैं कि मैं ध्यान करता हूं, पर बिना ध्येय वस्तु की जानकारी के ध्यान कैसे होगा? जैसे हम यदि किसी कुंवारी कन्या से कहें कि बेटी! तुम अपने पति का ध्यान करो, तो वह ध्यान नहीं कर सकती। उसने अपने होने वाले पति को देखा ही नहीं, तो ध्यान कैसे करेगी? जब लोगों ने ताजमहल को देखा ही नहीं है, तो वे ताजमहल का ध्यान कैसे करेंगे? इसी प्रकार जब तक हम भगवान को नहीं देखेंगे, उसके नाम और स्वरूप को नहीं जानेंगे, तब तक उसका हम ध्यान कर ही नहीं सकते।

भगवान के नाम का सच्चा ज्ञान तो गुरु महाराज जी ही देते हैं। गुरु के बारे में कहा है कि 'गु' नाम अन्धकार और 'रु' नाम प्रकाश। जो हमें ज्ञान देकर अज्ञानता के अंधेरे को समाप्त कर दे, वे ही सच्चे गुरु होते हैं।

आप जपे औरों को जपावे, नानक निश्चय मुक्ति पावे

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनो! मैं तो सच कह रही हूँ कि भगवान जब धरती पर आता है, तो भक्तों की पुकार सुनकर आता है; और वह कभी नहीं कहता कि मैं भगवान हूँ। जब भी महान पुरुष आते हैं, तो न श्रीकृष्ण ने बोला, न श्रीराम ने कभी कहा कि मैं भगवान हूँ। वे तो छिपने की कोशिश करते हैं। पर, फिर भी ज्ञान से ही पहचाने जाते हैं। अर्जुन ने जब तक स्वयं भगवान श्रीकृष्ण से ज्ञान प्राप्त नहीं किया, तब तक नहीं पहचाना और जब ज्ञान प्राप्त कर लिया तो जान लिया। ज्ञान लेने के बाद अर्जुन अफसोस करता है कि मैंने आपको कभी यादव कहकर पुकारा, तो कभी सखा कहकर पुकारा, अब आपसे क्षमा चाहता हूँ। आप तो गुरुओं के भी गुरु हो, आप साक्षात् भगवान हो। इसीलिए मैं कहती हूँ कि तुम्हारे बड़े भाग्य हैं। संत-महात्मा सत्संग सुना रहे थे, तो मैं मन में सोच रही थी कि इनके भी बड़े पुण्य हैं, क्योंकि श्री महाराज जी कहीं भी स्थान बनाने के विरुद्ध थे। श्री महाराज जी कहते थे कि बड़े-बड़े मठों में बड़े-बड़े द्वेष-भाव चलते हैं और ईर्ष्या फैली हुई है। उनका अपना संकल्प था कि मुझे कहीं स्थान नहीं बनाना है; क्योंकि जितने भी स्थान बनते हैं, वहाँ लड़ाई बढ़ती है और द्वेष-भाव फैलते हैं। पर, इन भक्तों की पुकार थी, किसी के रोकने से भी उसको रुकना नहीं है। समय बीतने के साथ ही धीरे-धीरे शुभ काम होने लगे। इसलिए तुम्हारे बहुत बड़े भाग्य हैं कि तुम लोग जाग गये। अब जो अच्छे, सज्जन आदमी होते हैं वे दूसरों को जगाने की कोशिश करते हैं। कहते हैं-

संत बड़े परमार्थी,

घन ज्यों बरसें आया।

तपन बुझावें और की,

अपनों पारस लाय।।

संत किसके लिए तपते हैं? ये नदी, वृक्ष किसके लिए तपते हैं? दूसरों के



उपकार के लिए। उनका तो स्वयं अपना उपकार हो चुका है-

संत विटप सरिता गिरि धरनी।

पर हित हेतु सबन की करनी।।

वे दूसरों के लिए ही करनी करते हैं। पर तुम्हारा काम है, पहले स्वयं भजन करो, तब ज्ञान का प्रचार करो। गुरु नानक देव कहते हैं-

आप जपे औरों को जपावे।

नानक निश्चय मुक्ति पावे।।

भक्तों पर कितना कष्ट पड़ा, खाने-पीने के बिना भी दिन गुजरे, पर उनको कोई परवाह नहीं, क्योंकि दुःख में ही भगवान की याद आती है। अगर बहुत धनवान भी बन गये, तो क्या सुखी हो सकते हैं। संतों ने कहा है कि सुख अन्य किसी चीज में नहीं है, केवल भगवान के नाम में ही सुख है। असली सुख वही है, जब नाम की याद बनी रहे। जिसको सुख मिला, वह भगवान के नाम-सुमिरण से मिला, धन-दौलत से

नहीं, पुत्र से नहीं मिला। यह शुभ मुहूर्त है, जिसमें ऐसी-ऐसी वाणियां सुनने को मिल रही हैं। आज सारे संसार में भयंकर रूप से ईर्ष्या-द्वेष की आग लगी हुई है।

वह आग कैसे बुझेगी? वह तो सत्संग रूपी वाणी से ही बुझेगी। संतों के पास ऐसा अध्यात्म ज्ञान है कि वह उसके द्वारा दुनिया की तपन बुझा सकते हैं। इंसान कितना ही करोड़पति क्यों न हो, लेकिन वह भी शान्ति चाहता है, वह भी चाहता है कि उसका मन शान्त हो। बड़े-बड़े साइंस वाले, वैज्ञानिक दुनिया में शान्ति नहीं स्थापित कर सके। शान्ति के दूत तो सन्त-महात्मा ही होते हैं। देखो, अब तुम्हें सेवा का मौका मिला हुआ है, इससे मत चूको। खूब भजन करो और प्रचार करो। धन्य हैं तुम्हारे भाग्य कि ऐसे महापुरुष का प्रवचन सुनने को मिला। इसलिए सब जगह सत्संग करो, द्वेष-भाव न करो। तुम्हारा गुरु महाराज से सत्य का नाता है। अगर वचन देकर मुकर गये, तो सत्य का नाता टूट जायेगा। अगर आज्ञा नहीं मानी, तो मनमत कहा जाता है। कहते हैं कि मनमत के ऊपर लख-चौरासी का भार होता है। अगर गुरु महाराज के दर पर पड़े रहोगे, तो उद्धार हो जायेगा। अन्य लोगों के दर पर ठोकर ही खाओगे। इस दरबार में इस शरीर से भी नाता जुड़ा रहता है और वहाँ भी जुड़ा रहता है। ये वेद-शास्त्रों की बातें हैं, मेरी अपनी बातें नहीं हैं। इसलिए द्वेष-भाव मत करो। चार दिन की जिन्दगी है, फिर यहाँ से जाना ही है। बड़े-बड़े राजा, महाराजा यहाँ नहीं रहे, तो हमको भी एक दिन चले जाना है।

जब मनुष्य को संतों का सानिध्य और सत्संग मिलता है, तो उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आ जाता है।

अंगुलिमाल के बारे में आता है कि वह बहुत ही हिंसक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। लोगों को मारकर उनकी उंगली काट लेता था और उन उंगलियों की माला बनाकर अपने गले में पहनता था। एक बार भगवान बुद्ध जंगल के रास्ते से कहीं जा रहे थे। रास्ते में उनको अंगुलिमाल मिला और वह भगवान बुद्ध को देखकर बहुत खुश हुआ कि यह बड़ा खूबसूरत व्यक्ति मेरे सामने आ गया। अब मैं इसकी उंगली काटूँगा और उससे अपना हार बनाऊँगा। बुद्ध उससे पूछते हैं कि अंगुलिमाल, तू ऐसा काम क्यों करता है? जब तूने मनुष्य को बनाया ही नहीं, तो फिर तू मनुष्य की उंगलियों को क्यों काटता है? अंगुलिमाल कहता है कि नहीं, मैं इन विचारों को नहीं मानता हूँ। जैसे बहुत से हठधर्मी लोग होते हैं, वे कहते हैं कि भगवान नाम की कोई चीज नहीं है। जैसे उनके सांसों को उनके माता-पिता ने वसीयत में दिया हो। परंतु नहीं, उन सांसों को देने वाला कोई और है।

अंगुलिमाल पहले तो बोला कि मैं इन बातों को नहीं मानता हूँ, परंतु जब बुद्ध ने उसको समझाया तो अंगुलिमाल भी उनका शिष्य और भिक्षुक बन गया।

इसी तरह रत्नाकर के बारे में आता है कि वह डाकू था। उसको जब नारद मिलते हैं, तो वह कहता है कि अहा! आज मैं तुझे मारूँगा। तब नारद जी उससे कहते हैं कि देख! तू मुझे बाद में मारना, पहले अपने परिवार के लोगों से पूछकर आ कि मैं जो पाप करके लाता हूँ, जो चोरी करके लाता हूँ, क्या उस पाप के भागीदार तुम भी बनोगे? उसने अपने घर जाकर परिवार-जनों से, पत्नी से और माता-पिता से पूछा, तो उन सबने कहा कि नहीं, हम तुम्हारे इस पाप के भागीदार नहीं बनेंगे। यदि तुम्हारी उंगली अग्नि में डालें, तो तुमको ही दर्द होगा। आदमी जैसा कर्म करेगा, उसे उसका वैसा ही फल मिलेगा। हमें तो पता ही नहीं कि तू पाप की कमाई लाता

है। इसलिए हम भागीदार नहीं बनेंगे। जो जैसा कर्म करेगा, वह उसका वैसा ही फल पायेगा। नारद जी का सत्संग सुनकर रत्नाकर का मन बदल गया। रत्नाकर ने नारद जी के पैरों में गिरकर क्षमा मांगी तथा उनसे आत्मज्ञान को जानकर अपने जीवन को धन्य बनाया।

मनुष्य जीवन का ध्येय है भगवान का भजन करना। पहले ध्येय को जानो, तभी तो तुम उस चीज का ध्यान करोगे। पहले तुम आराध्यदेव को जानो, तभी तुम आराधना कर सकते हो। पहले हमें अपने धर्म को धारण करना होगा, तभी हम जानेंगे कि हमारा वास्तविक धर्म क्या है! द्रौपदी का क्या धर्म था- जब दुःशासन तन से चीर उतार रहा था? अगर द्रौपदी वहीं

इन्सान कितना ही करोड़पति क्यों न हो, लेकिन शान्ति वह भी चाहता है, वह भी चाहता है कि मेरा मन शान्त हो। बड़े-बड़े साइंस वाले, वैज्ञानिक दुनिया में शान्ति नहीं स्थापित कर सके। शान्ति के दूत तो सन्त-महात्मा होते हैं।

अनुष्ठान करने लग जाती, वहीं यज्ञ-हवन करने लग जाती, तो क्या वह बच पाती, क्योंकि दुःशासन तो उसका चीर उतारने लगा था। तब वह कहती है कि हे भगवान-

बिना काज महाराज,

आज लाज गई मेरी।

दुःख हरो द्वारिका नाथ,

शरण मैं तेरी।।

हे द्वारिका नाथ! बिना अपराध, आज मेरा चीर हरण हो रहा है। हे नाथ, तुम देख रहे हो कि आज मेरी लाज जा रही है। मेरे पति पाँचों पाण्डव जो कि धर्म से बँधे हैं, उनके सिर झुके हैं। जब द्रौपदी द्वारिकानाथ की शरणागत हो जाती है और उन्हें पुकारती है, तब भगवान कहते हैं- द्रौपदी, अगर तू महल में ही मुझे याद कर

लेती, तो दुःशासन तेरे तन पर भी हाथ नहीं लगा पाता। पर हे द्रौपदी! पहले तूने अपनी ताकत आजमाई। तुझे विश्वास नहीं था कि ये नीच इस तरह का कर्म करेगा। पर जब तू बेसहारा बन गयी, कोई तेरा साथ सहारा देने वाला नहीं रहा, तब तूने मुझको याद किया। हे द्रौपदी! मैं तेरी जरूर रक्षा करूँगा। भगवान हृदय के अन्दर उसको सांत्वना देते हैं और फिर उसकी चीर बढ़ाते हैं।

अगर द्रौपदी कहती कि मैं किस धर्म को अपनाऊँ! पर नहीं, द्रौपदी धर्म के पाठ को जानती थी, धर्म के सूत्र को जानती थी, तभी तो द्रौपदी ने उसी वस्तु को धारण किया और अपनी लाज बचायी। देखो, जब प्रह्लाद को उसका पिता लाल तपते खम्भ के साथ बाँधना चाहता था, उसी समय भगवान नरसिंह खम्भ फाड़कर आ जाते हैं; क्योंकि प्रह्लाद भगवान को याद करता है- हे प्रभु! तूही मेरा सब कुछ है। भगवान! मेरा पिता मुझे मारना चाहता है, मेरे प्राणों की रक्षा करो! तभी कहा है कि चिन्ता तो भगवान की, उसके नाम की करनी चाहिए। देखो, जब हम परिवार से चले जाते हैं,

तब भी तो परिवार चलता है, इस चिन्ता को हम अपने लिए फाँसी बना लेते हैं। इन्हीं चिन्ताओं के अन्दर शरीर को छोड़कर चले जाते हैं, यही चिन्ता हमें बाँध लेती है। बार-बार मरना, बार-बार जन्म लेना, बार-बार माता की जठाराग्नि में, जानवरों की जठाराग्नि में ये आत्मा दुःख पाती है।

इसलिए कहते हैं कि यह शरीर मोक्ष का दरवाजा है और जो आत्मा इस मोक्ष के दरवाजे से वंचित रह जाती है, खाली चली जाती है, वह आत्मा फिर बार-बार जन्म लेती है, बार-बार दुःख पाती है। इसलिए यह जो मनुष्य शरीर है, यही बड़ा महान् है। यही मोक्ष का दरवाजा बताया। जो इस दरवाजे पर अपने जीवन का कल्याण करते हैं, उन्हीं को महान् कहते हैं।

आत्मज्ञानं बिना पार्थ, सर्वकर्म निरर्थकम्

माताश्री मंगला जी

प्रेमी सज्जनो! आज हम सब लोग अपनी श्री माता जी की जयंती के लिए एकत्रित हुए हैं और आप हमेशा सत्संग में सुनते हैं कि जयंती महान पुरुषों की मनाई जाती है और क्यों मनाई जाती है, तो जो भक्त उनके सानिध्य में थे या बाद में जुड़े, उनके बहुत से अनुभव हम लोगों के पास हैं, क्योंकि महान शक्ति अपने कार्यों, अपनी विलक्षण सेवाओं से अपना परिचय कराती है। श्री माता जी ने उस अध्यात्म ज्ञान, जिस ज्ञान को श्री हंस जी महाराज ने जन-जन के हृदय में रोपित किया



और श्री महाराज जी तो खुला आह्वान करते थे कि आओ, मुझसे आत्मज्ञान की चर्चा करो और आत्मज्ञान के बारे में जानो; लेकिन समय बदलता जाता है, फिर उनके निर्वाण के बाद, उनका शरीर पूरा होने के बाद में श्री माता जी ने इस प्रचार कार्य को संभाला, इस सेवा को संभाला, तो हम सब बहुत भाग्यशाली हैं कि अध्यात्म के साथ में उनकी ज्ञान की अनुभूति के साथ में, हम उनकी जयंती मनाते हैं और जयंती भी महान पुरुषों की ही मनाई जाती है, अभी हम लोग परसों ही नेपाल से आए हैं और वहां पर भी दो जगह बहुत बड़ा सम्मेलन हुआ, काठमांडू में भी हुआ, हेटोड़ा में काफी बड़ा सम्मेलन हुआ; बहुत-से भक्त लोग यहाँ आए हैं, कुछ आ नहीं पाए हैं। बड़ी शांतिपूर्वक वहां कार्यक्रम हुआ, चाहे वह भारत का कोई भी कोना हो और चाहे विश्व का कोई भी कोना हो, जहां आत्मा की प्यास की बात होती है, वहां असंख्य लोग हृदय से जुड़ जाते हैं,

चाहे भाषा समझ आए या ना आए, वे तो बहुत नजदीक के हैं, नेपाल की भाषा ऐसी नहीं जो समझ नहीं आए; पर उनको

ज्ञान से शांति मिलती है, क्योंकि वह ज्ञान भाषा से परे है। इसीलिए संतों ने कहा है कि जो आत्मज्ञान की बात है, वह ज्ञानी ही समझ सकता है और संसार में ज्ञान मिलना कोई आसान काम भी नहीं है। और आसान भी है, लेकिन उसके लिए चाहिए भावना। अभी श्री माता जी की याद में भजन गा रहे हैं, वे बहुत से भजन गाती थीं। **“भाव का भूखा हूं मैं और भाव ही एक सार है”**। हम पुत्र को प्रेम करते हैं, बच्चों को प्रेम करते हैं, अपने परिवार से प्रेम करते हैं। सभी का एक-दूसरे के प्रति एक भाव होता है। आपके घर में जब कोई बालक पैदा होता है, तो उसके प्रति आपका भाव बन जाता है और आप उससे प्यार करने लगते हैं; लेकिन उसकी शक्ल का कोई दूसरा व्यक्ति चलते-फिरते बाजार में आपको मिलता है, तो आपका उससे इतना प्यार नहीं होता है; क्योंकि वह भाव उसमें नहीं है। लेकिन जो बालक घर में है, उसके प्रति यह भाव है कि यह मेरा पुत्र

है, यह मेरी माता है, यह मेरा भाई है, तो श्री माता जी के जीवन में भाव का बहुत बड़ा महत्व था। वह हमेशा कहते थे कि वह भक्त नहीं जिसके अंदर भाव न हो। क्योंकि भक्ति तो भाव से ही होती है।

हम मंदिर में देखते हैं कि एक मूर्ति रखी है भगवान राम की, कृष्ण की, मां की मूर्ति होती है। पर, जब तक हमारा उस मूर्ति के प्रति भाव जागृत नहीं होता, हम उस मूर्ति के भेद को समझ नहीं सकते। महानपुरुषों ने उस भाव को ही भक्ति का मूल कहा है। हम तरह-तरह के संत-महात्माओं के विचार सुनते हैं। कितने आए और चले गए संसार को समझाते-समझाते। लेकिन जब वे जीते-जागते होते हैं, तब समाज नहीं समझता, संसार नहीं समझता है; लेकिन जब इस संसार से चले जाते हैं, तब उनके वचनों के हम शास्त्र बनाते हैं, उनकी वाणियों को सुनते हैं और वाणी सुन-सुनकर अपने अन्दर वैराग्य उत्पन्न करते हैं और अध्यात्म को खोजने का प्रयास करते हैं। लेकिन संतों ने कहा है कि वह प्रभु तेरे मन में है? वह अंदर आत्मा में ही है, पर तू उसे बाहर ढूँढ रहा है, वह हमारे हृदय में ही है और हम उसे बाहर ढूँढ रहे हैं, तो हम उसे पा नहीं सकते हैं।

इसीलिए जब महानपुरुष आते हैं, संत आते हैं, तो कहते हैं कि तू अपने मन के द्वार खोल।

मन मंदिर तन भेष कलंदर,

घट ही तीरथ नावां।

वह भगवान तो हमारे हृदय में ही है। आज हम सत्संग सुनने के लिए आए हैं।

पर, जब सत्संग में आते हैं, तो हम इस सोच से आते हैं कि हमें कुछ सीखने को मिलेगा, कुछ शिक्षा मिलेगी, कुछ हम अपना कल्याण कर सकेंगे और कल्याण कैसे होगा? जब हम अपने जीवन को कल्याण के मार्ग पर लगाएंगे। कबीर दास जी ने भी वही बात कही-

कबीरा खड़ा बाजार में,

मांगे सबकी खैर।

ना काहू से दोस्ती,

ना काहू से बैर॥

जो संत-महात्मा होते हैं, उनका किसी से ना बैर होता है, ना किसी से लड़ाई होती है, ना वैमनस्य होता है। वे तो सिर्फ एक अध्यात्म ज्ञान की बात करते हैं; क्योंकि वही ज्ञान हमें तारने वाला है। भाव ही भक्ति का एक सार है, वही भक्ति हमें तारेगी। चाहे हम किसी भी धर्म को मानते हों, नाना शास्त्र को पढ़ते हों-

नाना शास्त्र पठेन् लोके,

नाना देवत पूजन॥

आत्मज्ञान बिना पार्थ,

सर्व कर्म निरर्थक॥

सत्संग में हम बार-बार सुनते हैं, लेकिन घूम-फिरकर फिर वही बात आ जाती है कि हम उस ज्ञान को प्राप्त कैसे करें? कहाँ जाएं? लेकिन भगवान कृष्ण ने तो पहले ही अर्जुन को कह दिया कि हे अर्जुन! तेरे अंदर ही वह ज्ञान है। तो कितने भी शास्त्र पढ़ ले, शास्त्र आपको Direction दे सकते हैं, जैसे एक नक्शा होता है, जब हम गाड़ी चलाते हैं, तो नक्शे को देखते हैं कि हम सीधे रास्ते में चल रहे हैं कि गलत, वह आपको सही दिशा दिखाता है। अब तो खैर टेक्नोलोजी बहुत एडवांस हो गयी है। अब तो बहुत-से साधन, बहुत-सी Technology हो गई है। कहेंगे right मुड़ो, left मुड़ो और आपको उन instructions को follow

करना होता है; लेकिन अध्यात्म का तो एक ही instructions है कि वह तेरे मन में है। भगवान अर्जुन को यही समझाते हैं कि अर्जुन, तू क्यों बाहर भटक रहा है? तेरे-मेरे कई जन्म हो चुके हैं, लेकिन तू उन जन्मों के बारे में नहीं जानता, मैं जानता हूँ। आजकल कभी-कभी अखबार में आता है कि फलाने को अपना पुनर्जन्म याद आ

हम मंदिर में देखते हैं कि एक मूर्ति रखी है भगवान राम की, कृष्ण की, मां की मूर्ति होती है। पर, जब तक हमारा उस मूर्ति के प्रति भाव जागृत नहीं होता, हम उस मूर्ति के भेद को समझ नहीं सकते। महान पुरुषों ने उस भाव को ही भक्ति का मूल कहा है।

गया है, तो वह अपने बाप को बेटा कहकर पुकार रहा है, कोई भाई को मित्र कहकर पुकार रहा है, किसी-किसी को ऐसा वरदान हो जाता है कि उनको पुनर्जन्म याद होता है; लेकिन संत तो कहते हैं कि तेरा प्रभु तुझमें ही है, घट में ही है। हम जानेंगे कैसे? जानने की उस विधि को बताने के लिए सत्संग सुनाया जाता है। मुझे कई लोग मिलते हैं, कहते हैं- मां, हम सत्संग में आए थे और बस भगवान की प्राप्ति हो गई है, तो भगवान तो बचपन में मथुरा वासियों के साथ वृंदावन में घूमते थे, खेलते थे। लेकिन अर्जुन को ही प्यास क्यों लगी?

भगवान की जो आत्मा, भगवान की जो ज्ञान की प्यास थी, वह भक्त को क्यों लगी? क्योंकि वह खेल तो बचपन के थे। पर, एक खेल और भी निराला है जो हमारे अंदर चल रहा है। हम इक्कीस हजार छह सौ बार सांस ले रहे हैं, बार-बार सत्संग में यह सुनते हैं। देखिए, सत्संग क्या है? वह संतों की वाणी है। अब वही सत्संग अनेक बार सुनेंगे, उठेंगे, पल्ला झाड़ेंगे, फिर हम भूल जाएंगे। फिर वही सत्संग हमें अगली

बार भी याद आता है। संतों की वाणी कभी नहीं बदलती, वह तो अटपटी होती है।

संतों की वाणी अटपटी,

झटपट लखे न कोय।

जो झटपट लखे तो,

चटपट दर्शन होय॥

उस वाणी को बार-बार हम सुनते हैं, सुनाते हैं और महसूस करते हैं कि हम इस दुनिया में आए क्यों हैं? जब आए तो हम मानुष चोले में थे और जाएंगे किसमें? इतनी-सी पुड़िया बन जाएगी। फिर कोई परिवार का सगा होगा, भाई होगा, पिता होगा, चाचा होगा, मामा होगा; कोई उस पुड़िया को ले जाकर अपनी परंपरा के अनुसार तीर्थ स्थानों में बहा देगा; उस पुड़िया को बहाने के लिए घड़े में ले जाते हैं। लाल कपड़ा बांध देते हैं और बहा देते हैं, उस व्यक्तित्व का अस्तित्व खत्म हो जाता है। जब घर वाले वापस आ रहे होते हैं, उनमें से एक को नदी में समर्पित करके आए हैं और फिर आकर हम लोग वही तीन दिन का शोक, दुकान खोलो, यह करो, व्यापार-धंधा, सब में लग जाते हैं। फिर भी जागृति नहीं होती कि-

आए हैं सो जाएंगे,

राजा रंक फकीर।

एक सिंहासन चढ़ चला,

एक बांधा जाए जंजीर॥

क्यों बांधा जाएगा जंजीर? जब वृद्ध होता है, पलंग पर लेटा होता है, मौत का संदेश आ जाता है, यमदूत आ जाते हैं तो वह कहते हैं कि परिवार को देख, बेटे मेरे लिए लेने के लिए आ गए। बहू जो होती है, उनको परिवार में कहते हैं, मुझे लेने के लिए आ गए; लेकिन उनको वे यमदूत दिखते हैं, पर रिश्तेदारों को वे यमदूत/देवदूत नहीं दिखते हैं। देवदूत तो उसे लेने आते हैं। हम लोग सत्संग क्यों सुनते हैं?

बहुत काल करिअ सतसंगा।

तब होहिं सब संसय भंगा॥

REALIZATION OF GOD IS POSSIBLE ONLY IN THIS HUMAN FORM

SHRI HANS JI MAHARAJ

When a saint looks out for your interest and shares his knowledge through discourses for the benefit of people, society tends to cast aspersions by labelling him as a cult leader, or call him a fake. The great poet saint Surdas Ji said in his bhajan:

The nature of karma is unfathomable,

The ignorant rule,

While the wise are on the streets.

I gave a discourse in Lucknow a while back. I was not inclined to, but did it at the request of the disciples. In that program a certain person was invited by the organizers, he was the speaker of the legislative assembly (Vidhan Sabha) of the previous government. He heard Satsang during the entire course of the program, and remarked at end that the mind is very fickle and it is extremely difficult to control it. When he began to leave, I said that if it is extremely difficult in this human form, then imagine how would that hardship compare in the life-form of a pig, or a dog?

If this human life is not used to realize 'God', then the next life form received might just be that of a donkey. What do you think will happen then? I have often seen that in the sweltering summers the washerman washes clothes on the riverside, and the donkey is often tied somewhere nearby exposed to the extreme weather, without food or water. At the end of the day, the washerman piles the washed clothes on to his back and sits atop and rides back home. So, think hard that if you

receive this birth, then what will you do for your salvation?

Today people talk big things about spirituality and inner peace. But they barely know if you ask them what spirituality is? In the Geeta, Lord Krishna says that in all the different types of knowledge that exists in the world, True Knowledge of the Self is me. Know your True Self, and you will know



me. There are several renowned educational establishments today, I wonder if the intellectuals teaching there can even explain the meaning of half a quatrain; or even the meaning of 'Being part of Oversoul, man's soul is eternal'. How is 'God' the father, and the man borne of Him?

Years are spent turning the rosary, yet uncontrolled and restless remains the mind,

Stop turning the rosary beads, turn the true name within and master your mind.

The verse above is a doha by the Saint Tulsidas Ji which is found in many textbooks, however a

handful of people understand its true meaning and continue to preach it to children without knowing.

It must be understood that souls that are liberated from the entrapments of this world reside here. God is everywhere and these free spirits are one with God. There are three things that are of paramount value at any age. If you go to the king, ruler, or powerful person of the time, he will take care of you, ask about your welfare, and recognize and value your skills. In the past Raja Bhoj recognized people with niche qualities or skills and gave them a welcome befitting those. Akbar the great too collected gifted, brilliant people and included them in his court. He was known to have nine such jewels (men) in his court and they often found solutions to his problems and questions.

It is said in the Ramayan that there has never been anyone in this world that received power and remained unaffected by it. Lord Ram had complete faith in his brother Bharat. When Bharat went to visit Lord Ram during his exile in the forest there was a small dust cloud created by his movements. Lord Ram asks Laxman to see who was approaching. Laxman confirms that Bharat was approaching, but says that Bharat was crafty and was probably coming to get rid of Ram. He suspected that Bharat who was ruler of the kingdom in the absence of Lord Ram wanted to continue ruling even after Ram's term of exile was over and despite his popularity amongst

the people. Ram dismissed Laxman by saying that if Laxman wanted to rule he would make Bharat handover the kingdom to him, but he could never doubt Bharat's intent. It turned out that Bharat was the epitome of honesty and loyalty.

I received Updesh 'knowledge' from my master in 1922-23, and in 1926 I was ordered by my Guru to impart True Knowledge to others. At first I went to several people in positions of power and authority, thinking that if they adopt the path of knowledge, their subjects will follow, and that is what typically happens. It is known that only when the ruler of Kashi, became Saint KabirDas Ji's disciple; did Kabir Das Ji stop being troubled and ridiculed in society. Once that happened, King Dharamdas used his wealth to spread his Gurus teachings far and wide. When Kings follow the path of True Knowledge, their subjects follow, and the entire society benefits from it.

Do you know why Buddha's teaching made its mark worldwide? It is because king Ashoka became his disciple and put the power of his entire wealth in spreading his Gurus teachings. He even sent his son and daughter to preach and spread the word of their Guru far and wide. Thus, I too went to several Kings at the time, but they always looked at me with suspicion. They assumed that I want something from them, whereas I only wanted to offer the treasure of knowledge I had received. I bear no ill-feeling towards them, however for their small material treasures, they renounced the unbound wealth of True Knowledge.

There is a story about a frog that lived in a well. Once he met a frog that lived in the sea. They got talking and the frog from the well tried to ascertain the size of

the sea. So, he took one leap and asked the sea frog if that was how big the sea was, but the sea frog said no it was bigger, the first frog took another leap, and another, until he has taken a complete round of the well to assess the size of the sea. Once he has covered the well, he announced that the sea could be no bigger than that. The kings I met were no different. When I met them, at first, they said they had no time. A few years later I met them again, and said perhaps now you have time. They had lost their kingdoms.

I often remark that in the villages there are grindstones in which grain is ground and flour is made, and in cities there are flour mills that take in grains and make flour of different kinds. Similarly man today consumes what he can in the form of food, and generates waste. I call the men that have no time for self-realization, waste mills. Once a poor saint met a king and told him that his life situations was far better than the kings. Perplexed the king comments that it cannot be so, but the saint explains that once they're in deep sleep neither knows whether they sleep on stone or on a luxurious bed. Thus, their nights so far were equal. The king wanted to know how the poor saint's situation was better than his? He proceeds to tell him that despite being the king and living in luxury he is constantly plagued by fear and worry of losing his wealth, and succumbing to his enemies. The poor saint on the other hand sleeps free, with peace of mind and without fear of anything. Furthermore, I meditate on God's true name and that is what makes my life far better than yours.

Coming back to what I was saying, there are three things in any age that are relevant. King of the present, historically there have been great kings like Raja

Harishchandra, Raja Bali but you will not benefit from them today! King Mordhvaj was a supreme devotee of the Lord. His devotion was tested by God through his son. He was asked to sacrifice his son, and the king knowing his son to be God's own blessing sacrificed his son, thereby passing his test and his son was granted life due to his unwavering faith.

Such souls, exist even today, but how can you recognize it? You do not have True Knowledge. You only recognize the outer forms, that is all you know. Thus, you cannot benefit from the Kings of the past. It is only an influential person, or person of authority in the present that can help you with a job, or your business. Similarly, a skilled doctor of the present day that can help cure you of your illnesses, not some great physician that lived centuries ago. Similarly, singing praises of past Saints, and masters will not yield anything. You need to go to a True Master of the present. Only when you seek them, their wisdom, will they reveal the True Knowledge of the Self to you.

The Geeta says, seek the True Master humbly surrender to him, serve him, and request him to share his knowledge, and he will explain and reveal the essence of True Knowledge to you. If you seek the truth, do this, and you will definitely benefit from it.

The Ramayan describes the character and life of Lord Ram. The Geeta describes the activities of the Divine, Lord Krishna. There is no sacred book, or scripture which does not recount the glory of the Guru. The glory and greatness of a True Guru is infinite. This is why great men always remember and meditate on their Masters first. It is said— That the mere remembrance of the toe nail of a true Master is enough to reveal the Divine Light.

ऋतु-संधि काल में कायाकल्प और आत्म-जागरण का विज्ञान हैं-वासंतिक नवरात्र!

भा रतीय संस्कृति में पर्वों का निर्धारण केवल खगोलीय घटनाओं के आधार पर नहीं, बल्कि मानव शरीर और मन पर पड़ने वाले प्राकृतिक प्रभावों के सूक्ष्म विश्लेषण के आधार पर किया गया है। जब शिशिर ऋतु की ठिठुरन समाप्त हो रही होती है और ग्रीष्म ऋतु का आगमन पूरी तरह नहीं हुआ होता, तब प्रकृति एक विशेष 'संधि-काल' से गुजरती है। इसी संधिकाल में 'वासंतिक नवरात्र' (चैत्र नवरात्र) का आगमन होता है।

शारदीय नवरात्र जहाँ उल्लास और विजय का पर्व है, वहीं वासंतिक नवरात्र 'साधना', 'तप' और 'आंतरिक शुद्धि' का पर्व है। यह वह समय है जब प्रकृति अपना पुराना आवरण त्यागकर नव-पल्लवित हो रही होती है। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह जीवात्मा के लिए भी अपने पुराने संस्कारों की केंचुली उतारकर नूतनता धारण करने का स्वर्णिम अवसर

होता है। इसी दिन से हिंदू नव-संवत्सर का भी आरंभ होता है, जो सृष्टि की रचना का प्रथम दिवस माना गया है।

ऋतु-संधि का विज्ञान: नवरात्र को वर्ष में दो बार मनाने के पीछे एक गहरा आयुर्वेदिक और वैज्ञानिक कारण है। चैत्र मास दो ऋतुओं-सर्दी और गर्मी का मिलन बिंदु है। आयुर्वेद में इसे 'यम-दंष्ट्रा' (अर्थात् मृत्यु की दाढ़) कहा गया है। सुनने में यह शब्द कठोर लग सकता है, किंतु इसका अर्थ यह है कि ऋतुओं

का यह बदलाव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत संवेदनशील होता है। **कफ दोष का शमन:** सर्दी के मौसम में हमारे शरीर में जमा हुआ कफ सूर्य की बढ़ती गर्मी से पिघलने लगता है। यदि इस समय भोजन पर नियंत्रण न रखा जाए, तो यह जठराग्नि को मंद कर देता है, जिससे ज्वर, खांसी और मौसमी संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है।

शरीर का आंतरिक शोधन: नवरात्र के नौ दिनों का उपवास

शरीर के लिए एक 'मरम्मत प्रक्रिया' का कार्य करता है। जब हम अन्न का त्याग करते हैं या हल्का आहार लेते हैं, तो पाचन तंत्र को विश्राम मिलता है। इससे शरीर की प्राण-ऊर्जा भोजन पचाने के बजाय शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालने में लगती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। विज्ञान भी अब यह मानता है कि संयमित उपवास से



वासंतिक नवरात्र पर विशेष

शरीर की कोशिकाएं स्वयं का नवीनीकरण करती हैं। पुरानी और रुग्ण कोशिकाएं नष्ट होती हैं और नई, स्वस्थ कोशिकाओं का निर्माण होता है, जिससे शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता अद्भुत रूप से बढ़ जाती है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण: नौ दिनों की अंतर्यात्रा में जहाँ विज्ञान शरीर की शुद्धि करता है, वहीं अध्यात्म मन और प्राण की शुद्धि करता है। वासंतिक नवरात्र

का समय ब्रह्मांडीय ऊर्जा के अवतरण का समय है। **रात्रि का महत्व:** इसे 'नव-दिन' न कहकर 'नव-रात्र' कहा गया है। भारतीय चिंतन में रात्रि को शांति, विश्राम और अंतर्मुखी होने का प्रतीक माना गया है। दिन की भागदौड़ में मन बहिर्मुखी रहता है, किंतु रात्रि के शांत वातावरण में ध्यान और सुमिरण फलदायी होते हैं।

गर्भस्थ शिशु की भांति साधना: जिस प्रकार माँ के गर्भ में शिशु नौ महीने तक विकसित होता है, उसी प्रकार साधक इन नौ रातों में अपनी चेतना को माँ जगदंबा के संरक्षण में रखकर पुनर्जीवित करता है। यह समय अपनी खोई हुई आत्म-शक्ति को पुनः संचित करने का है।

व्रत संबंधी नियम और विधि-विधान: पाठकों के लिए यह जानना अनिवार्य है कि व्रत का अर्थ केवल भोजन त्यागना नहीं, बल्कि संकल्प धारण करना है। वासंतिक नवरात्र के लिए शास्त्रों और आयुर्वेद सम्मत विधि-विधान है। सर्व प्रथम करते हैं कलश स्थापना। कलश स्थापना ब्रह्मांड के प्रतीक स्वरूप की जाती है। मिट्टी का पात्र, हमारे पार्थिव शरीर और पृथ्वी तत्व का प्रतीक है। जौ बोना, जौ को सृष्टि की पहली फसल और अन्नपूर्णा का रूप माना जाता है। जौ का तेजी से बढ़ना साधक की सुख-समृद्धि और साधना की प्रगति का सूचक होता है। जल पूर्ण कलश, यह वरुण देवता और जीवन के मूल आधार 'जल तत्व' का प्रतिनिधित्व करता है। आहार संयम में अनाज का त्याग, गेहूँ, चावल, दाल आदि भारी अनाज वर्जित हैं; क्योंकि इस ऋतु-परिवर्तन के समय पाचन-शक्ति कमजोर होती है। सात्विक आहार यानी कटू, सिंघाड़ा, साबूदाना और मौसंबी फल। ये पदार्थ पचने में हल्के होते हैं और शरीर में लघुता लाते हैं। उत्तम स्वास्थ्य और साधना के लिए दिन में केवल एक बार सात्विक भोजन ग्रहण करना या केवल फलाहार पर रहना श्रेष्ठ माना गया है। साधक के लिए निर्देश है कि वह सदैव स्मरण रखे कि नवरात्र की सफलता केवल कर्मकांड में नहीं, बल्कि आचरण की शुद्धता में निहित है। इस अवधि में साधक के लिए शारीरिक और मानसिक ऊर्जा को संचित करने के लिए ब्रह्मचर्य अनिवार्य है। यह ओज और तेज की वृद्धि करता है।

मंत्रों की ध्वनि नाड़ियों को शुद्ध करती है और मन को एकाग्र करती है। व्रत की अवधि में भूमि-शयन का तात्पर्य विलासिता का त्याग है, यदि संभव हो तो भूमि पर शयन करें। यह पृथ्वी तत्व से जुड़ने और अहंकार मिटाने का एक आध्यात्मिक प्रयोग है। नारियों में शक्ति का वास मानकर कन्याओं का पूजन करें। यह केवल परंपरा नहीं, बल्कि मातृ-

शक्ति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन है। नवरात्र व्रत में साधकों के लिए आवश्यक है कि वे तामसिक भोजन का त्याग करें यानी प्याज, लहसुन, मांस, मदिरा, बासी भोजन और अत्यधिक मसालेदार पदार्थों का सेवन से पूर्णतः दूर रहें क्योंकि ये मन में उत्तेजना, आलस्य और क्रोध उत्पन्न करते हैं। व्रत की अवधि में क्रोध, निंदा, चुगली और असत्य भाषण न करें, इससे व्रत खंडित हो जाता है। उपवास का अर्थ ही है ईश्वर के समीप वास करना, अतः मन का पवित्र होना अनिवार्य है। व्रत में दिन में सोना वर्जित है; क्योंकि आयुर्वेद के अनुसार, वसंत ऋतु में दिन में सोने से शरीर में कफ दोष बढ़ता है, जो अनेक रोगों का कारण बनता है। अतः साधक को दिन में सोने से बचना चाहिए। व्रत की अवधि में मन, वचन और कर्म से किसी को पीड़ा न पहुँचाना ही सबसे बड़ा व्रत है। भारतीय ऋषियों ने नवरात्र के माध्यम से मन को नियंत्रित करने का एक अद्भुत मनोविज्ञान विकसित किया था। नौ दिनों का यह अनुशासन हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए संजीवनी है। जब हम अपनी जिह्वा (स्वाद) और इंद्रियों पर नियंत्रण रखते हैं, तो हमारी आंतरिक संकल्प शक्ति प्रबल होती है। यह आत्म-नियंत्रण हमें जीवन के अन्य संघर्षों में भी विजयी बनाता है। सात्विक आहार और मंत्रों का लयबद्ध उच्चारण मस्तिष्क को शांत करता है। इससे मन की चंचलता कम होती है और अवसाद या चिंता जैसे विकार दूर होते हैं।

नवरात्र की साधना मूलाधार चक्र से लेकर सहस्रार चक्र तक की यात्रा है। प्रथम दिन 'शैलपुत्री' (स्थिरता) से शुरू होकर अंतिम दिन 'सिद्धिदात्री' (पूर्णता) तक पहुँचना, मानव चेतना के विकास का ही रूपक है। नवरात्र केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह ऋतु-परिवर्तन के साथ सामंजस्य बिठाने की एक वैज्ञानिक जीवन-शैली है। नवरात्र पर्व हमें संदेश देता है कि जैसे प्रकृति पतझड़ के बाद नए कोमल पत्ते धारण करती है, वैसे ही हमें भी अपने पुराने दुःखों, असफलताओं और मानसिक विकारों को त्यागकर नव-वर्ष में प्रवेश करना चाहिए।

जो साधक इन नियमों का पालन श्रद्धा और विवेक के साथ करता है, उसे न केवल देवी की कृपा प्राप्त होती है, बल्कि वह एक निरोगी काया और प्रखर बुद्धि का भी स्वामी बनता है। अतः इस वासंतिक नवरात्र में हम केवल भोजन का त्याग ही न करें, बल्कि अपने भीतर के आसुरी भावों आलस्य और अज्ञान का वध कर अपनी सोई हुई आत्म-शक्ति को जागृत करने के लिए आध्यात्मिक साधना भी करें। ■

रामराज्य की वैश्विक संकल्पना का मार्ग- प्रशस्त करने का संदेश वाहक है राम नवमी!

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि केवल एक छोड़कर नहीं, बल्कि प्रेम और त्याग द्वारा विश्व पर शासन किया। राजकुमार राम के जन्म की तिथि नहीं है, बल्कि उनका साम्राज्य भौगोलिक सीमाओं में बंधा हुआ नहीं, बल्कि यह उस 'चेतना' के अवतरण का पर्व है जिसने मानवता को 'मर्यादा' का अर्थ सिखाया। भारतीय जनमानस में राम केवल एक राजा नहीं हैं, वे राष्ट्र के प्राण हैं। जब गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं- **सप्त भूमि सागर मेखला, एक भूप रघुपति कोसला**, तो वे केवल अयोध्या के राजा का वर्णन नहीं कर रहे होते, बल्कि वे एक ऐसे सार्वभौमिक नेतृत्व की परिकल्पना प्रस्तुत करते हैं, जिसका शासन सातों द्वीपों और समुद्रों से घिरी पूरी पृथ्वी पर न्याय और धर्म के रूप में स्थापित हो। आज जब भारत पुनः अपनी सांस्कृतिक जड़ों को सींचकर 'विश्वगुरु' के पद पर आसीन होने के लिए अग्रसर है, तब राम नवमी का पर्व हमें यह आत्मचिंतन करने का अवसर देता है कि रामराज्य केवल एक पौराणिक गाथा नहीं, बल्कि भविष्य के भारत की एक साध्य रूपरेखा है।



राम नवमी 27 मार्च पर विशेष

भारत को विश्व का मार्गदर्शन करने का अधिकारी बनाता है।

सप्त भूमि सागर मेखला: वैश्विक संप्रभुता का अर्थ इस चौपाई का शाब्दिक अर्थ है कि सातों द्वीपों और समुद्र रूपी करधनी से घिरी हुई पृथ्वी के एकमात्र राजा रघुपति हैं। आध्यात्मिक और राजनीतिक दृष्टि से इसके गहरे निहितार्थ हैं: चक्रवर्ती सम्राट की परिभाषा में राम ने अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा

अधिकारी बनाता है।

रामराज्य: एक आधुनिक, कल्याणकारी राज्य की पूर्णता रामराज्य की परिकल्पना को अक्सर धार्मिक चश्मे से देखा जाता है, जबकि वस्तुतः यह प्रशासन का सर्वोच्च आदर्श है। तुलसीदास जी रामराज्य की परिभाषा देते हुए लिखते हैं-

**दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहीं काहुहि ब्यापा॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥**

अर्थात्, रामराज्य में किसी को भी शारीरिक, मानसिक या भौतिक कष्ट नहीं था। सभी मनुष्य आपस में प्रेम करते थे और अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करते थे। आधुनिक संदर्भ में रामराज्य के स्तंभ हैं-

भयमुक्त समाज: जहाँ अपराधी को दंड का भय हो और सज्जन को निर्भयता प्राप्त हो। राम ने रावण और ताड़का जैसे आतताइयों का वध करके समाज को भयमुक्त किया।

समतामूलक समाज: रामराज्य में कोई छोटा या बड़ा नहीं था। निषादराज गुह को गले लगाना और शबरी के जूठे बेर खाना, यह सिद्ध करता है कि सामाजिक समरसता रामराज्य की आधारशिला है। जब तक समाज में जातिगत भेदभाव है, तब तक रामराज्य की कल्पना अधूरी है।

पारिस्थितिक संतुलन: राम का जीवन वन और पर्यावरण के प्रति सम्मान का प्रतीक है। चित्रकूट और दंडकारण्य के वनों को संरक्षित करना, नदियों की पवित्रता बनाए रखना यह रामराज्य का पर्यावरणीय संदेश है। भारत के **‘विश्वगुरु’** बनने की संभावना और राम का आदर्श वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ युद्ध, आतंकवाद और मानसिक अवसाद ने मानवता को घेर रखा है, वहाँ विश्व की दृष्टि भारत की ओर है। भारत सैन्य शक्ति के साथ-साथ सांस्कृतिक शक्ति के रूप में भी उभर रहा है। राम का चरित्र ही वह शक्ति है जो भारत को विश्वगुरु बना सकता है।

कूटनीति और शांति: राम ने लंका पर आक्रमण करने से पहले शांति के सभी प्रयास किए। अंगद का दूत बनकर जाना यह दर्शाता है कि भारत युद्धोन्मादी नहीं, बल्कि शांतिप्रिय राष्ट्र है। विश्व शांति के लिए राम की नीति आज भी प्रासंगिक है।

कर्तव्य बनाम अधिकार: पश्चिमी सभ्यता अधिकारों पर केंद्रित है, जबकि भारतीय संस्कृति और राम का जीवन कर्तव्यों पर केंद्रित है। राम ने अधिकार के लिए नहीं, बल्कि पिता के वचन और रघुकुल की मर्यादा के लिए वनवास स्वीकार किया। यदि विश्व ‘मेरा अधिकार क्या है?’ के स्थान पर ‘मेरा कर्तव्य क्या है?’ सोचना शुरू कर दे, तो अधिकांश संघर्ष समाप्त हो जाएंगे। भारत इसी **‘कर्तव्य-बोध’** को लेकर विश्व का नेतृत्व कर सकता है।

सामाजिक समरसता: राष्ट्रीय एकता का सूत्र राम नवमी केवल पूजा-पाठ का पर्व नहीं है, यह राष्ट्र को जोड़ने का महापर्व है। राम उत्तर में जन्म लेते हैं, दक्षिण तक यात्रा करते हैं, पूर्व और पश्चिम को स्पर्श करते हैं। उन्होंने अपने वनवास काल में टूटे हुए समाज को जोड़ा।

आदिवासी और वनवासी उत्थान: राम ने उस समय के उपेक्षित वनवासी समाज को संगठित किया और उन्हें एक अनुशासित सेना में बदल दिया। यह आज के भारत के लिए संदेश है कि राष्ट्र की असली शक्ति महलों में नहीं, बल्कि वनवासियों और ग्रामीणों में बसती है। उन्हें सशक्त करना ही रामराज्य की दिशा में पहला कदम है।

नारी गरिमा: अहिल्या का उद्धार करके राम ने नारी के सम्मान की पुनर्स्थापना की। सीता की खोज के लिए समुद्र लांघ जाना, नारी की गरिमा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

आज के भारत में रामराज्य: क्या आज के भारत में रामराज्य संभव है? यह प्रश्न अक्सर उठता है। उत्तर है- हाँ, और इसकी प्रक्रिया आरंभ हो चुकी है। रामराज्य लाने के लिए किसी जादुई छड़ी की नहीं, बल्कि ‘चरित्र निर्माण’ की आवश्यकता है।

शासन में पारदर्शिता: जहाँ राजा का जीवन खुली किताब हो, जैसा राम का था। राम ने लोकलाज और प्रजा के संतोष के लिए अपने व्यक्तिगत सुख का भी त्याग कर दिया।

जनमत का सम्मान: एक साधारण धोबी के कथन पर भी राम ने राजधर्म का पालन किया, यद्यपि यह व्यक्तिगत रूप से उनके लिए अत्यंत पीड़ादायक था। यह लोकतंत्र की उच्चतम अवस्था है, जहाँ अंतिम पंक्ति के व्यक्ति की आवाज़ भी सुनी जाती है। राम ने सुग्रीव और विभीषण को उनका अधिकार दिलाने में विलंब नहीं किया। त्वरित न्याय ही सुशासन की पहचान है। बुनियादी सुविधाओं का अंतिम व्यक्ति तक पहुँचना ही रामराज्य का आर्थिक प्रारूप है।

मन में राम, राष्ट्र में राम: राम नवमी पर केवल मंदिरों में भीड़ बढ़ाना हमारा संकल्प नहीं होना चाहिए। हमें अपने भीतर के रावण अर्थात् अहंकार को जलाकर राम अर्थात् विवेक को प्रतिष्ठित करना होगा। भारत विश्वगुरु तभी बनेगा, जब भारत का प्रत्येक नागरिक राम के आदर्शों को जियेगा। जब पुत्र राम जैसा बनेगा, जब भाई भरत जैसा त्यागी बनेगा, जब मित्र सुग्रीव जैसा निष्ठावान बनेगा, और जब शासक राम जैसा प्रजा वत्सल बनेगा। ‘सप्त भूमि सागर मेखला’ का स्वामी होना केवल भौगोलिक विजय नहीं है, यह सांस्कृतिक विजय है।

आइए, इस राम नवमी पर हम प्रतिज्ञा करें कि हम एक ऐसे भारत का निर्माण करेंगे जो समर्थ हो, सशक्त हो, और संस्कारी हो। जब भारत समर्थ होगा, तभी विश्व में शांति स्थापित होगी। यही राम का संदेश है और यही समय की मांग है। **‘रामो विग्रहवान् धर्मः’** यानी राम धर्म के साक्षात् स्वरूप हैं। ■

राम कृपा नासहिं सब रोगा श्री गरुड़ जी के सात प्रश्न

प्र स्तुत प्रसंग रामचरित मानस के उत्तरकांड में वर्णित है; जिसमें गरुड़ जी काकभुसुण्डि जी से क्रमशः सात प्रश्न पूछते हैं। इन प्रश्नों में मानव शरीर की महिमा, मानस रोग, संतों की संगति एवं श्री सद्गुरु कृपा से सभी प्रकार के रोगों के नाश का वर्णन किया गया है। गरुड़ जी निवेदन करते हैं-

दुर्लभ कौन-सा शरीर है, फिर सबसे बड़ा दुःख कौन है और सबसे बड़ा सुख कौन है, यह भी विचार कर संक्षेप में ही कहिए। संत और असंत का भेद आप जानते हैं, उनके सहज स्वभाव का वर्णन कीजिए। फिर कहिए कि श्रुतियों में प्रसिद्ध सबसे महान पुण्य कौन-सा है और सबसे भयंकर पाप कौन है। फिर मानस रोगों को समझाकर कहिए। आप सर्वज्ञ हैं और



नाथ मोहि निज सेवक जानी। सप्त प्रश्न मम कहहु बखानी॥

गरुड़ जी प्रेम सहित काकभुसुण्डि जी से प्रार्थना करते हैं- हे कृपालु! यदि मुझ पर आपका प्रेम है, तो मुझे अपना सेवक जानकर मेरे सात प्रश्नों के उत्तर विस्तार सहित कहिए। प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा। सब ते दुर्लभ कवन सरीरा॥ बड़ दुख कवन कवन सुख भारी। सोउ संछेपहिं कहहु बिचारी॥ संत असंत मरम तुम्ह जानहु। तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु॥ कवन पुन्य श्रुति बिदित बिसाला। कहहु कवन अघ परम कराला॥ मानस रोग कहहु समुझाई। तुम्ह सर्बग्य कृपा अधिकाई॥

हे नाथ! हे धीर बुद्धि! पहले तो यह बताइए कि सबसे

मुझ पर आपकी कृपा भी बहुत है।

तात सुनहु सादर अति प्रीती। मैं संछेप कहउँ यह नीती॥
नर तन सम नहिं कवनिउ देही। जीव चराचर जाचत तेही॥
नरक स्वर्ग अपबर्ग निसेनी। ग्यान बिराग भगति सुभ देनी॥
सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर। होहिं बिषय रत मंद मंद तरा॥
काँच किरिच बदलें ते लेहीं। कर ते डारि परम मनि देहीं॥

काकभुसुण्डि जी ने कृपापूर्वक कहा- हे तात! अत्यंत आदर और प्रेम के साथ सुनिए। मैं यह नीति संक्षेप से कहता हूँ। नर तन के समान कोई शरीर नहीं है। चर और अचर सभी जीव इसकी याचना करते हैं। यह मनुष्य शरीर नरक, स्वर्ग

और मोक्ष की सीढ़ी है तथा कल्याणकारी ज्ञान, वैराग्य और शुभकारी भक्ति देने वाला है। ऐसे मनुष्य शरीर को धारण करके भी जो लोग श्री हरि का भजन नहीं करते और नीच से भी नीच विषयों में अनुरक्त रहते हैं, वे पारसमणि को हाथ से फेंक देते हैं और बदले में काँच के टुकड़े ले लेते हैं।

**नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं। संत मिलन सम सुख जग नाहीं।।
पर उपकार बचन मन काया। संत सहज सुभाउ खगराया।।
संत सहहिं दुख पर हित लागी। पर दुख हेतु असंत अभागी।।
भूर्ज तरु सम संत कृपाला। पर हित निति सह बिपति बिसाला।।**

हे गरुड़ जी! इस जगत में दरिद्रता के समान कोई दुःख नहीं है तथा संतों के मिलने के समान कोई सुख नहीं है। और हे पक्षिराज! मन, वचन और शरीर से परोपकार करना, यह संतों का सहज स्वभाव है। संत दूसरों की भलाई के लिए दुःख सहते हैं और अभागे असंत दूसरों को दुःख पहुँचाने के लिए। कृपालु संत भोज वृक्ष के समान दूसरों के हित के लिए भारी विपत्ति सहते हैं। वे परहित के लिए अपनी खाल तक उधड़वा लेते हैं।

**सन इव खल पर बंधन करई। खाल कढ़ाई बिपति सहि मरई।।
खल बिनु स्वारथ पर अपकारी। अहि मूषक इव सुनु उरगारी।।
पर संपदा बिनासि नसाहीं। जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं।।
दुष्ट उदय जग आरति हेतू। जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू।।**

किंतु दुष्ट स्वभाव के लोग सन की भाँति दूसरों को बांधते हैं और उन्हें बांधने के लिए अपनी खाल खिंचवाकर विपत्ति सहकर मर जाते हैं। हे गरुड़ जी! दुष्ट व्यक्ति बिना किसी स्वार्थ के साँप और चूहे के समान अकारण ही दूसरों का अपकार करते हैं। वे पराई संपत्ति का नाश करके स्वयं नष्ट हो जाते हैं, जैसे खेती का नाश करके ओले नष्ट हो जाते हैं। दुष्ट का अभ्युदय, प्रसिद्ध अधम ग्रह केतु के उदय की भाँति जगत के दुःख के लिए ही होता है।

**संत उदय संतत सुखकारी। बिस्व सुखद जिमि इंदु तमारी।।
परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा। पर निंदा सम अघ न गरीसा।।
हर गुर निंदक दादुर होई। जन्म सहस्र पाव तन सोई।।**

द्विज निंदक बहुत नरक भोग करि। जग जनमइ बायस सरीर धरि।।

और संतों का अभ्युदय सदा ही सुखकर होता है, जैसे चंद्रमा और सूर्य का उदय विश्व भर के लिए सुखदायक होता है। वेदों में अहिंसा को परम धर्म माना है; इसी प्रकार परनिन्दा के समान भारी पाप नहीं है। शंकर जी और गुरु की निंदा करने वाला मनुष्य अगले जन्म में मेंढक होता है और वह हजार जन्म तक मेंढक का ही शरीर पाता है। ब्राह्मणों की निंदा करने वाला

व्यक्ति बहुत से नरक भोगकर फिर जगत में कौए का शरीर धारण करके जन्म लेता है।

**सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी। रौरव नरक परहिं ते प्रानी।।
होहिं उल्लूक संत निंदा रत। मोह निसा प्रिय ग्यान भानु गत।।
सब कै निंदा जे जड़ करहीं। ते चमगादुर होइ अवतरहीं।।
सुनहु तात अब मानस रोगा। जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा।।**

जो अभिमानी जीव, देवों और वेदों की निंदा करते हैं, वे रौरव नरक में पड़ते हैं। संतों की निंदा में लगे हुए लोग उल्लू होते हैं, जिन्हें मोह रूपी रात्रि प्रिय होती है और ज्ञान रूपी सूर्य जिनके लिए अस्त हो गया रहता है। जो मूर्ख मनुष्य सबकी निंदा करते हैं, वे चमगादड़ होकर जन्म लेते हैं। हे तात! अब मानस रोग सुनिए, जिनसे सब लोग दुःख पाया करते हैं।

**मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला। तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला।।
काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा।।
प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई। उपजइ सन्यपात दुखदाई।।
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब सूल नाम को जाना।।**

सब रोगों की जड़ मोह अर्थात् अज्ञान है। उन व्याधियों से फिर और बहुत से शूल उत्पन्न होते हैं। काम वात है, लोभ अपार बढ़ा हुआ कफ है और क्रोध पित्त है, जो सदा छाती जलाता रहता है। यदि, कहीं ये तीनों भाई- वात, पित्त और कफ प्रीति कर लें अर्थात् मिल जाएं, तो दुःखदायक सन्निपात रोग उत्पन्न होता है। जो कठिनाई से प्राप्त और पूर्ण होने वाले विषयों के मनोरथ हैं, वे ही सब शूल कष्टदायक रोग हैं, उनके नाम कौन जानता है।

**ममता दादु कंडु इरषाई। हरष बिषाद गरह बहुताई।।
पर सुख देखि जरनि सोइ छई। कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई।।
अहंकार अति दुखद डमरुआ। दंभ कपट मद मान नेहरुआ।।
तृस्ना उदरबृद्धि अति भारी। त्रिबिधि ईषना तरुन तिजारी।।
जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका। कहँ लकि कहँ कुरोग अनेका।।**

ममता दाद है, ईर्ष्या डाह खुजली है, हर्ष-विषाद गले के रोगों की अधिकता है; गलगंड, कण्ठमाला आदि रोग हैं। पराए सुख को देखकर जो जलन होती है, वही क्षय रोग है। दुष्ट स्वभाव और मन की कुटिलता ही कोढ़ है। अहंकार अत्यंत दुःख देने वाला डमरू गांठ का रोग है। दम्भ, कपट, मद और मान नहरुआ नसों का रोग है। तृष्णा बड़ा भारी उदर वृद्धि जलोदर रोग है। तीन प्रकार अर्थात् पुत्र, धन और मान की इच्छाएं प्रबल तिजारी हैं। ईर्ष्या-द्वेष और अविवेक दो प्रकार के ज्वर हैं। इस प्रकार अनेकों बुरे रोग हैं, जिन्हें कहाँ तक कहाँ।

एक व्याधि बस नर मरहिं, ए असाधि बहु व्याधि।

पीड़हिं संतत जीव कहूँ सो किमि लहै समाधि॥

नेम धर्म आचार तप ग्यान जग्य जप दान।

भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं रोग जाहिं हरिजान॥

एक ही रोग के वश होकर मनुष्य मर जाते हैं, फिर ये तो बहुत से असाध्य रोग हैं। ये जीव को निरंतर कष्ट देते

क्या है!

राम कृपा नासहिं सब रोगा। जौं एहि भांति बनै संजोगा॥

सद्गुरु बैद बचन बिस्वासा। संजम यह न बिषय कै आसा॥

हे गरुड़ जी! इन रोगों का पूर्णतः नाश तभी संभव है, जब भगवान श्री रामचन्द्र जी की कृपा से सद्गुरु रूपी वैद्य मिल



रहते हैं, ऐसी दशा में वह समाधि और शांति को कैसे प्राप्त करे। इन रोगों को दूर करने के लिए शास्त्रों में अनेक नियम, धर्म, आचार, तप, ज्ञान, यज्ञ, दान आदि उपाय रूपी करोड़ों औषधियां हैं, परंतु हे गरुड़ जी! उनसे ये रोग नहीं जाते।

एहि बिधि सकल जीव जग रोगी। सोक हरष भय प्रीति बियोगी॥

मानस रोग कछुक मैं गाए। हहिं सब कैं लखि बिरलेन्ह पाए॥

जाने ते छीजहिं कछु पापी। नास न पावहिं जन परितापी॥

बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे। मुनिहु हृदय का नर बापुरे॥

इस प्रकार जगत में समस्त जीव रोगी हैं, जो शोक, हर्ष, भय, प्रीति और वियोग के दुःख से और भी दुःखी हो रहे हैं। मैंने ये थोड़े से मानस रोग कहे हैं। ये रोग हैं तो सबको, परंतु इन्हें कोई विरला ही जान पाता है। ये पापी रोग जान लिए जाने से कुछ क्षीण अवश्य हो जाते हैं, परन्तु पूर्णतः नाश नहीं होते। जब विषय रूप कुपथ्य पाकर ये मुनियों के हृदय में भी अंकुरित हो उठते हैं, तब बेचारे साधारण मनुष्य की क्षमता ही

जायें और उनके वचन में दृढ़ विश्वास हो जाए; रोग नाश के लिए परहेज यह है कि कभी विषयों की आशा ही न रहे। इसलिए, हमें ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे सद्गुरु महाराज का संसर्ग और सानिध्य मिल जाये, तभी जीव भवसागर के दुसह्य दुःखों से पार जा सकता है। ■

मार्च, 2026 के पर्व-त्योहार

- 3 मार्च मंगलवार- पूर्णिमा एवं होलिका दहन □ 4 मार्च बुधवार- होली रंग उत्सव □ 8 मार्च रविवार- महिला दिवस एवं रंग पंचमी
- 15 मार्च रविवार- एकादशी □ 19 मार्च गुरुवार- चैत्र नवरात्र आरंभ, हिन्दू नववर्ष एवं गुड़ी पड़वा □ 20 मार्च शुक्रवार- ईद-उल-फितर □ 27 मार्च शुक्रवार- राम नवमी □ 29 मार्च रविवार-एकादशी □ 31 मार्च मंगलवार- महावीर जयंती

प्रकृति का अद्भुत संगम है भारतीय नव वर्ष विक्रम संवत्

भारतीय नव वर्ष केवल कैलेंडर बदलने वाला वर्ष नहीं होता, बल्कि यह ब्रह्मांड का एक महत्वपूर्ण उत्सव होता है। संसार में नव वर्ष मनाने की अनेक परंपराएं हैं। सामान्यतः नव वर्ष का अर्थ कैलेंडर की तारीख बदलना मात्र होता है, अंग्रेजी नव वर्ष में मध्यरात्रि को घड़ी की सुइयां बारह पर मिलते ही एक नया वर्ष मान लिया जाता है। किंतु भारतीय ऋषियों ने 'समय' को केवल एक सीधी रेखा में चलने वाली गणना नहीं, बल्कि एक चक्रीय और खगोलीय घटना माना है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होने वाला भारतीय नव वर्ष, मानव निर्मित किसी निर्णय का परिणाम नहीं है, बल्कि यह खगोलीय घटनाओं, ऋतु परिवर्तन और ग्रहों की गति का एक स्वाभाविक परिणाम है। यह वह दिन है, जब प्रकृति स्वयं अपना श्रृंगार करती है और ब्रह्मांड में एक नई ऊर्जा का संचार होता है। इसलिए, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारतीय नव वर्ष (विक्रम संवत्) संसार का सबसे वैज्ञानिक और प्रकृति-सम्मत नव वर्ष है।

खगोलीय आधार: शून्य से सृष्टि की ओर भारतीय काल-गणना का आधार सूर्य और चंद्रमा दोनों की गतियों का सूक्ष्म समन्वय है। खगोल विज्ञान के दृष्टिकोण से यह दिन अत्यंत विशिष्ट है।

वसंत संपात: खगोलीय घटनाओं के अनुसार, यह वह समय होता है, जब सूर्य भूमध्य रेखा को पार करके उत्तरायण की ओर बढ़ता है। इस समय दिन और रात की अवधि लगभग बराबर होती है। यह संतुलन का समय है। प्रकृति में न अत्यधिक शीत होती है, न अत्यधिक उष्णता।

सृष्टि का प्रथम दिवस: ब्रह्मपुराण और अन्य प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, इसी दिन (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) को ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना का कार्य आरंभ किया था। आधुनिक विज्ञान जिसे महा-विस्फोट का सिद्धांत कहता है, भारतीय चिंतन उसे नाद-ब्रह्म से सृष्टि का विस्तार मानता है। अतः यह केवल वर्ष का आरंभ नहीं, बल्कि 'युगादि' अर्थात् युग का आदि है।

कालगणना का गणित: भारतीय पंचांग में 'अधिमास' (अधिक मास) और 'क्षय मास' की व्यवस्था सौर वर्ष (365 दिन) और चंद्र वर्ष (354 दिन) के बीच के 11 दिनों

के अंतर को पाटती है। यह खगोलीय गणित इतना सटीक है कि हजारों वर्षों बाद भी ऋतुओं और महीनों में कभी अंतर नहीं आता, जबकि पश्चिमी कैलेंडरों को सुधारने के लिए इतिहास में कई बार संशोधन करने पड़े हैं।

नव संवत्सर का ज्योतिषीय प्रभाव: भारतीय ज्योतिष शास्त्र में नव वर्ष का अत्यंत गहरा महत्व है। यह केवल समय का मापक नहीं, बल्कि भविष्य का सूचक भी है। जब नया संवत्सर आरंभ होता है, तो पूरे वर्ष के लिए 'ग्रहों का मंत्रिमंडल' गठित होता है।

प्रकृति और ऋतुओं का नव-विहान: 1 जनवरी को जब नव वर्ष मनाया जाता है, तब उत्तरी गोलार्ध में प्रकृति सुप्त अवस्था में होती है, वृक्ष पत्रविहीन होते हैं और कड़ाके की ठंड होती है। भारतीय नव वर्ष में हर वर्ष का एक विशिष्ट नाम होता है। यह 60 संवत्सरों का चक्र है, जैसे—प्रभव, विभव, नल, राक्षस, आनंद आदि। वर्ष का नाम ही उस वर्ष के स्वभाव की भविष्यवाणी कर देता है। यह एकमात्र ऐसी पद्धति है जो सूर्य (आत्मा का कारक) और चंद्रमा (मन का कारक) दोनों की गतियों को साथ लेकर चलती है। यह वही दिन है जब महाराज विक्रमादित्य ने शकों को पराजित कर भारत को विदेशी दासता से मुक्त किया था और 'विक्रम संवत्' की स्थापना की थी। यह दिन प्रभु श्री राम के राज्याभिषेक का भी दिन है और धर्मराज युधिष्ठिर के संवत् का भी। नव संवत्सर का प्रभाव केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामान्य जन-जीवन के हर पहलू को स्पर्श करता है। व्यापारी वर्ग इसी दिन से अपने नए बही-खाते शुरू करता है, क्योंकि यह शुभता और लाभ का प्रतीक है। भारतीय नव वर्ष कोई रुढ़िवादी परंपरा नहीं, बल्कि खगोल विज्ञान, गणित और प्रकृति के नियमों का एक परिष्कृत दस्तावेज है। यह हमें सिखाता है कि हम प्रकृति से अलग नहीं हैं, बल्कि उसका एक अभिन्न अंग हैं।

इस पावन अवसर पर, हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम इस वैज्ञानिक और गौरवशाली परंपरा को न केवल मनाएं, बल्कि अपनी आने वाली पीढ़ियों को इसके वैज्ञानिक और आध्यात्मिक महत्व से परिचित कराएं। यह सृष्टि के उत्सव में भागीदार बनने का आमंत्रण है। ■

माता शबरी शुद्ध भक्त थीं। शबरी को उनके गुरु मुनि मतंग जी ने शरीर त्याग करते समय कहा था कि एक दिन भगवान राम तेरी कुटिया पर आएंगे। वे संपूर्ण जीवन श्रद्धा, प्रेम और भक्ति के साथ राम का रास्ता जोहती रहीं; क्योंकि उन्हें अपने गुरु की वाणी पर पूर्ण विश्वास था। वे हर दिन भगवान के आने की प्रतीक्षा करतीं, उनके स्वागत की

तैयारियां करतीं, उनके लिए कंद-मूल-फल की व्यवस्था करतीं। इस प्रकार राम की प्रतीक्षा करते-करते वे युवा से वृद्ध हो गईं, भगवान नहीं आए। किन्तु फिर भी शबरी माता निराश नहीं हुई, बल्कि उनकी भक्ति और बढ़ती गयी; अतः एक दिन उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान श्री राम अपने भाई लक्ष्मण के साथ उनकी कुटिया पर पधारे। माता शबरी ने उनका स्वागत किया, अपने आंसुओं से उनके चरण धोए तथा उन्हें अपने जूठे बेर खिलाए, भगवान ने भी प्रेम के वशीभूत होकर उन्हें ग्रहण किया। वे भाव-विह्वल होकर भगवान राम से बोलीं- मैं आपकी स्तुति किस तरह करूं, मैं अत्यंत मंदबुद्धि हूँ, तब श्री रघुनाथ जी बोले- मैं तो केवल एक भक्ति का ही संबंध मानता हूँ। मैं आपको अपनी नवधा भक्ति बताता हूँ, ध्यान से सुनो और हृदय में धारण करो।

भगवान राम ने कहा- हे शबरी! प्रथम भक्ति संतों का सत्संग, दूसरी मेरे कथा प्रसंग में प्रेम, तीसरी अभिमान रहित होकर गुरु के चरणकमलों की सेवा, चौथी कपट छोड़कर मेरे गुण समूहों का गान, पांचवीं दृढ़ विश्वास के साथ मेरे नाम रूपी मंत्र का जाप, छठी इन्द्रियों का संयम, सदाचार और वैराग्य, सातवीं जगत भर को समभाव से मुझमें ओत-प्रोत देखना, आठवीं संतों को मुझसे भी अधिक मानना, यथा लाभ में संतोष करना, स्वप्न में भी पराए दोषों को न देखना तथा नौवीं सबके साथ छल-रहित सरल व्यवहार करना, हृदय में मेरा भरोसा रखना और किसी भी अवस्था में हर्ष व दीनता न होना ही सच्चे भक्त की पहचान है। भगवान राम कहते हैं कि यदि इनमें से एक भी किसी के अंदर है, तो वह मुझे अत्यंत प्रिय है; किन्तु तुममें तो ये सभी

दृढ़ता से उपस्थित हैं। इसलिए हे भामिनि! तुम मुझे अत्यंत प्रिय हो!

नव महु एकउ जिन्ह के होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरे। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे॥

माता शबरी की कृपा से यह अत्यंत गूढ़ रहस्य हम सब भी जान पाए। हमारे जीवन में भी इनमें से एक भी भक्ति हृदय में उदित हो जाए, तो हमारे हृदय रूपी

कुटिया में भी भगवान का आगमन हो जाएगा। ■

शबरी की अटूट भक्ति

भूल बैठा राम को अच्छी नहीं बात है

भूल बैठा राम को अच्छी नहीं बात है।
चार दिन की चांदनी अंधेरी फिर रात है॥ टेक॥
विषय-विकारों वाली चादर लपेट के।
कब तक सोयेगा मूरख तू लेट के।
उठ जाग देख हो गया प्रभात है॥
चार दिन की चांदनी अंधेरी फिर रात है॥ 1॥
खाली हाथ आया तू खाली हाथ जायेगा।
प्रभु के भजन बिन पीछे पछतायेगा।
बारम्बार तुम्हें समझाये दीनानाथ है॥
चार दिन की चांदनी अंधेरी फिर रात है॥ 2॥
मिट्टी वाला घड़ा तेरा एक दिन फूटेगा।
माता-पिता बहन-भाई सभी नाता टूटेगा।
कर ले भजन कुछ, यही साथ जात है॥
चार दिन की चांदनी अंधेरी फिर रात है॥ 3॥
बड़े-बड़े पापियों को तार दिया राम ने।
रावण जैसे दुष्टों को मार दिया राम ने।
बन अनजान क्यों भूलता बात है॥
चार दिन की चांदनी अंधेरी फिर रात है॥ 4॥
सगे और सम्बन्धी तेरे काम नहीं आयेंगे।
एक दिन तुझे वो अकेले छोड़ जायेंगे।
तू ही मन धीरे-धीरे उनसे हटाये जा॥
चार दिन की चांदनी अंधेरी फिर रात है॥ 5॥

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी की प्रेरणा से हर्षोल्लास के साथ मनाया गया गणतंत्र दिवस समारोह

श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी की प्रेरणा से 26 जनवरी, 2026 को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में हर्षोल्लास के साथ गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया। हम सभी को ज्ञात ही है कि भारतीय गणराज्य में प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया जाता है। यह आयोजन संपूर्ण भारतवर्ष के साथ-साथ विश्व-भर में फैले भारतीय दूतावासों एवं प्रतिष्ठानों में झंडारोहण के साथ-साथ विभिन्न सांस्कृतिक एवं देशभक्ति के प्रेरणादायक कार्यक्रमों के साथ धूमधाम से मनाया जाता है। गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश की राजधानी दिल्ली में कर्तव्य पथ पर एक भव्य परेड का आयोजन किया जाता है जिसकी सलामी देश के राष्ट्रपति लेते हैं। इस परेड में देश की तीनों सेनाओं, अर्द्ध-सैनिक बलों, दिल्ली पुलिस, एनसीसी आदि सुरक्षा बलों के मार्च के साथ विभिन्न प्रदेशों की सांस्कृतिक झांकियां भी निकाली जाती हैं जिनमें वहां की संस्कृति, सभ्यता, समृद्धि और विरासत झलकती है। देश की सेनाएं विभिन्न साहसिक एवं चमत्कारिक प्रदर्शनों के साथ अपनी शक्ति, सामर्थ्य, शौर्य और पराक्रम का भी प्रदर्शन करती हैं। साथ ही जनता के समक्ष देश में निर्मित विविध अस्त्र-शस्त्रों का भी प्रदर्शन किया जाता है। इस समारोह में जहां देश के प्रधानमंत्री अपने सहयोगियों के साथ उपस्थित रहते हैं, वहीं विपक्ष के नेता, सेना, पुलिस, प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल रहते हैं। इसके अलावा किसी न किसी देश के राष्ट्राध्यक्ष इसके मुख्य अतिथि होते हैं और विभिन्न देशों के राजदूत तथा दिल्ली सरकार की मुख्यमंत्री अपने सहयोगियों के साथ रहते

हैं। इस भव्य परेड को देखने देश-विदेश से हजारों लोग उत्साह के साथ कर्तव्य पथ के दोनों ओर उपस्थित रहकर अपने बुलंद नारों और करतल ध्वनि से सैनिकों का उत्साह-वर्द्धन करते हैं। विगत वर्षों से परेड का नेतृत्व महिला अधिकारी कर रही हैं, जो गौरव की बात है। इस बार परेड में सैनिकों के साथ उनके सहयोगी कुत्ते, घोड़े, ऊँट और बाजों को भी शामिल किया गया।

इसी श्रृंखला में हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर, नई दिल्ली) भी

सांख्य जी महाराज के पधारने पर श्री सुरेश वर्मा और राकेश सिंह ने पुष्पहार पहनाकर उनका स्वागत किया। श्री सांख्य जी ने झंडारोहण के बाद ग्रुप फोटोग्राफी कराई और लड्डू प्रसाद वितरण का शुभारंभ किया।

झंडारोहण से पहले सुश्री प्रिया वर्मा, मनीषा दुबे और लकी उपाध्याय के नेतृत्व में आश्रम परिसर में एक झंडा रैली का आयोजन किया गया जिसमें बालक-बालिकाओं, स्त्री और पुरुषों ने सहर्ष भाग लेकर देशभक्ति की आवाज को बुलंद किया। हाथों में तिरंगे झंडे,



भारत के 77वें गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 2026 को
श्री हंसलोक आश्रम, भाटी नई दिल्ली में झंडारोहण किया गया एवं राष्ट्रगान गाया गया

हर वर्ष अपने मुख्यालय में गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन करती है। इस अवसर पर झंडारोहण के साथ बालक-बालिकाओं की विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं। इस वर्ष गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि श्री सांख्य जी महाराज रहे; उन्होंने झंडारोहण किया, राष्ट्रगान गाया एवं देशभक्ति के नारों में सबके साथ अपना स्वर मिलाकर उन्हें बुलंद किया। समारोह में श्री

गले में तिरंगा पट्टा, छाती पर तिरंगा बैज और मुँह से उच्च व समवेत स्वर में देशभक्ति के नारे लगाते हुए रैली ने संपूर्ण आश्रम परिसर के मार्गों पर भ्रमण किया। रैली में लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। यह भव्य झंडा रैली बहुत ही सुंदर रही जिसमें उपस्थित सभी स्त्री, पुरुष, बालक एवं बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर देश की एकता, अखण्डता और पारस्परिक भ्रातृभाव को

मजबूत किया।

झंडारोहण के पश्चात बालक-बालिकाओं की गायन और भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी। श्री उमाकांत चौधरी, श्री सुरेश वर्मा और श्री बी. के. त्यागी को प्रतियोगिता का जज नियुक्त किया गया। प्रतियोगिता में 16 बालक-बालिकाओं ने भाग लेकर अपनी गायन और भाषण प्रतिभा से सबको प्रभावित किया। जजों द्वारा दिए अंकों के आधार पर गायन प्रतियोगिता में सुश्री मोनिका दुबे प्रथम,

कुमारी सांची द्वितीय तथा कुमारी गरिमा सनवाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार भाषण प्रतियोगिता में श्री निपुण सिंह ने प्रथम, शिवम ने द्वितीय तथा सुश्री गीतांजलि ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इसके बाद 100 मीटर दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें आयु के अनुसार बालक और बालिकाओं को 11 से 14 वर्ष और 15 से 18 वर्ष के दो समूहों में बांटा गया। इस दौड़ प्रतियोगिता में 11 से 14 वर्ष के बालकों की दौड़ में श्री वैभव पाल ने प्रथम, कुलदीप सिंह ने द्वितीय तथा हर्ष दुबे ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार 15 से 18 वर्ष आयु वर्ग के बालकों ने दौड़ प्रतियोगिता में श्री आनन्द कुमार ने प्रथम, लोकेश दुबे ने द्वितीय तथा सुधांशु कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त

किया। इसी तरह 11 से 14 वर्ष आयु वर्ग की बालिकाओं में सुश्री कुमारी त्रिशा ने प्रथम, सुश्री अनामता ने द्वितीय तथा सुश्री

जिसमें 8 महिलाओं ने भाग लिया। महिला दौड़ प्रतियोगिता में श्रीमती संजना देवी ने प्रथम, श्रीमती गीतादेवी ने द्वितीय तथा श्रीमती प्रीति देवी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

सभी विजेताओं को हंसज्योति संस्था की ओर से महात्मा शुचि बाई जी, प्रबंधक श्री मानस स्वाई, हंसलोक संदेश पत्रिका के संपादक श्री राकेश सिंह, श्री हंसलोक सेवक संगठन के प्रभारी श्री सुरेश वर्मा, फाइनैस हेड श्री महेश यादव तथा

भारत के 77वें गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 2026 के सुअवसर पर श्री हंसलोक आश्रम, भाटी नई दिल्ली में निकाली गयी तिरंगा रैली

रानी कुमारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी क्रम में 15 से 18 वर्ष आयु वर्ग की बालिकाओं ने 100 मीटर प्रतियोगिता में कुमारी श्रुति ने प्रथम, कुमारी आंचल ने द्वितीय तथा सुधांशु कुमारी ने तृतीय स्थान

मीडिया विभाग के श्री बी.के. त्यागी द्वारा संयुक्त रूप से एक मेडल, स्मृति चिन्ह और सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। प्रथम स्थान प्राप्त प्रतियोगियों को मेडल, स्कूल बैग एवं सर्टिफिकेट, द्वितीय स्थान प्राप्त प्रतियोगियों

को मेडल, बैडमिंटन रैकेट एवं सर्टिफिकेट तथा तृतीय स्थान प्राप्त प्रतियोगियों को मैडल, टिफिन बॉक्स एवं सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। गणतंत्र दिवस समारोह का संचालन कुमारी प्रिया वर्मा, मनीषा दुबे और लकी उपाध्याय ने संयुक्त रूप से किया। इस आयोजन से जहाँ बालक-बालिकाओं में देशभक्ति व अनुशासन को बढ़ावा मिला, वहीं उनके भीतर छिपी गायन, भाषण और शारीरिक शक्ति को उभरने का मौका मिला।



भारत के 77वें गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 2026 के सुअवसर पर श्री हंसलोक आश्रम, भाटी नई दिल्ली में विभिन्न बाल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विजेता बालक-बालिकाओं को हंसज्योति की ओर से पुरस्कृत किया गया

प्राप्त किया। इस दौड़ प्रतियोगिता में 50 से अधिक बालक-बालिकाओं ने भाग लेकर आयोजन को सफल बनाया। इस अवसर पर अनौपचारिक रूप से महिलाओं की भी 100 मीटर दौड़ प्रतियोगिता आयोजित की गयी

इस अवसर पर सामूहिक भण्डारे का भी आयोजन किया गया। इस तरह अनेक अमिट स्मृतियां छोड़ते हुए गणतंत्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। ■

परमाराध्या माताश्री राजेश्वरी देवी की जयंती 'मातृ शक्ति दिवस' के सुअवसर पर विशाल जनकल्याण समारोह

आप सभी प्रेमी भक्तों को अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि परमाराध्या माताश्री राजेश्वरी देवी जी की जयंती **“मातृ शक्ति दिवस”** के सुअवसर पर 4 व 5 अप्रैल, 2026 (शनिवार एवं रविवार) को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में **‘विशाल जनकल्याण समारोह’** आयोजित किया जाएगा। **परमपूज्य श्री भोले जी महाराज** एवं **डॉ. माताश्री मंगला जी** इस समारोह के मुख्य अतिथि एवं वक्ता होंगे। इसके साथ ही अनेक विद्वानों, बुद्धिजीवियों, समाज सुधारकों तथा महात्मागण के उद्बोधन के अलावा प्रसिद्ध संगीतकारों एवं गायकों द्वारा भजन-संगीत तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की जाएगी। इस सुअवसर पर जिज्ञासुओं को आत्मज्ञान का व्यावहारिक बोध भी कराया जाएगा।



अतः आप अपने क्षेत्र से अधिक से अधिक प्रेमी भक्तों, जिज्ञासुओं एवं श्रद्धालुओं के साथ सपरिवार पधारकर आत्म लाभ अवश्य प्राप्त करें।

कार्यक्रम निम्नानुसार है-

4 अप्रैल को सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक प्रवचन एवं भजन-संगीत

5 अप्रैल को सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक प्रवचन एवं भजन-संगीत

स्थान- श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड,

भाटी, छतरपुर, नई दिल्ली-110074

निवेदक- हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर), नई दिल्ली

संपर्क नंबर: 8800291788, 8800291288

इस जनकल्याण समारोह का सीधा प्रसारण हंसलोक T.V.
पर दोनों दिन सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक किया जायेगा।

www.youtube.com/@hanslokTV
<https://www.facebook.com/Hanslok>

समाचार पत्र हंसलोक संदेश के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित विवरण की घोषणा

- | | |
|---|---|
| 1. प्रकाशन स्थल- | (फार्म-4)
श्री हंसलोक आश्रम, खसरा नं-947,
भाटी माइंस रोड, भाटी,
महरोली, नई दिल्ली-110074 |
| 2. प्रकाशन अवधि- | मासिक |
| 3. मुद्रक का नाम | मंगल |
| क्या भारत का नागरिक है | हां |
| पता- | E-4, असोला होम्स, असोला,
महरोली, नई दिल्ली-110074 |
| 4. प्रकाशक का नाम | मंगल |
| क्या भारत का नागरिक है | हां |
| पता- | E-4, असोला होम्स, असोला,
महरोली, नई दिल्ली-110074 |
| 5. संपादक का नाम- | राकेश सिंह |
| क्या भारत का नागरिक है | हां |
| पता- | बी-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,
महरोली, नई दिल्ली-110074 |
| 6. उन व्यक्तियों के
नाम व पते जो समाचार
पत्र के स्वामी हों तथा जो
समस्त पूंजी के एक प्रतिशत
से अधिक के साझेदार या
हिस्सेदार हों। | श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,
खसरा नं-947,
भाटी माइंस रोड, भाटी,
महरोली, नई दिल्ली-110074 |

मैं मंगल एतद्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गए विवरण सत्य हैं।

मंगल

(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

01-03-2026

श्री हंसलोक सेवक सूचना

सभी श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं तथा जूनियर सेवकों को सूचित किया जाता है कि माताश्री राजेश्वरी देवी जी की जयंती **“मातृ शक्ति दिवस”** के सुअवसर पर **4 व 5 अप्रैल, 2026** (शनिवार एवं रविवार) को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में **‘जनकल्याण समारोह’** आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर हम सबको **परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी** के दर्शन, प्रवचन एवं सेवा का सौभाग्य प्राप्त होगा।

इस जनकल्याण समारोह के अवसर पर **3 से 6 अप्रैल, 2026 तक श्री हंसलोक सेवक व सेविकाओं का “सेवा शिविर” लगाया जा रहा है** जिसमें सभी सेवक/सेविकाएं समारोह की व्यवस्था से संबंधित विभिन्न कार्यों में सेवा-सहयोग करेंगे। इस अवसर पर 3 अप्रैल, 2026 को अपराह्न 2:30 बजे से श्री हंसलोक सेवकों की एक बैठक रखी गयी है जिसमें सभी सेवक/सेविकाओं का भाग लेना आवश्यक है। अतः सभी दस्तानायक अपने सहयोगी सेवक/सेविकाओं के साथ 2 अप्रैल की शाम अथवा 3 अप्रैल की सुबह तक श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली अवश्य पहुंच जायें।

निवेदक

प्रभारी- श्री हंसलोक सेवक संगठन



श्री हंसलोक आश्रम में 77वाँ गणतंत्र दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ संपन्न

नई दिल्ली। श्री हंसलोक आश्रम में दिनांक 26 जनवरी, 2026 को 77वाँ गणतंत्र दिवस बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पूज्य श्री सांख्य जी महाराज ने सभी क्षेत्रों से पधारे प्रेमी भक्तों, आश्रमवासियों एवं हंसज्योति के कर्मचारियों की उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। ध्वजारोहण के पश्चात सभी उपस्थित जनों ने एक स्वर में राष्ट्रीय गान गाकर राष्ट्र के प्रति अपनी श्रद्धा और सम्मान व्यक्त किया।

समारोह के अंतर्गत 11 से 18 वर्ष आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें खेल, गीत-संगीत एवं भाषण प्रतियोगिताएँ प्रमुख रहीं। बच्चों ने उत्साह और उमंग के साथ भाग लिया तथा अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के अंत में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। समारोह का वातावरण देशभक्ति, आनंद और उत्साह से ओत-प्रोत रहा तथा सभी उपस्थित लोगों ने इस आयोजन की सराहना की।



आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।



MOB: 8800291788/ 8800291288



/hanslok